

# भारत भारती

रती

( तेलुगु )

■ ■

शि  
६८



तेलुगु

जान

विश्वेयंति आऽ.

उमु ब्रायंडि ।

ठि नेचुकाण्डि ।

म.वन्म

## प्रकाशककी ओरसे

समितिका बोध वाक्य "एक हृदय हो भारत जननी" इस बातका द्योतक है कि सारे भारतमें अेकता प्रस्थापित हो । अेकता-प्रस्थापनके इस लक्ष्यकी पूर्तिके लिये समितिने हिन्दीके व्यापक प्रचारको आवश्यक माना है और इसी दृष्टिसे वह उसका प्रचार करती आ रही है । किन्तु आजकी परिस्थितिमें अेकमात्र अितनाही पर्याप्त नहीं है । आज तो सभी भारतीय भाषाओंके ज्ञानका आदान-प्रदान अेकता-स्थापनकी दृष्टिसे आवश्यक हो उठा है ।

जो लिपियाँ देवनागरीसे काफी दूर हैं, भाषा सीखते समय उनका सीखना और लिखना विद्यार्थियोंके भाषा-सीखनेके अुत्साहको भंग कर देता है । इस कठिनायीको ध्यानमें रखते हुअे समितिने यह निश्चय किया है कि प्रान्तीय भाषाओंकी परीक्षाओं चलानेके साथ-साथ उन भाषाओंकी पाठ्य पुस्तकें भी उन-अुन भाषाओंमें किन्तु देवनागरी लिपिमें तैयार की जायें ।

अैसा करते समय यह हेतु कदापि नहीं रहा है कि विद्यार्थियोंको प्रान्तीय लिपियोंका ज्ञान नहीं देना है । प्रत्येक पुस्तकके अन्तमें परिशिष्ट रूपमें प्रान्तीय लिपि और उसके सम्बंधकी जानकारी दी जायेगी । सीखनेका भार प्रान्तीय भाषा सीखनेवालों पर छोड़ा जा रहा है ।



यह ध्यानमें रखा गया है कि पुस्तकको तैयार करते समय पुस्तकमें अतिनी सामग्री दी जा सके जिससे पढ़नेवालेको सामान्य वातालाप करनेका ज्ञान प्राप्त हो जाय और दैनिक व्यवहारके शब्दोंसे वह परिचित हो जाये। क्रमशः विकासकी दृष्टिसे इस पुस्तकको तीन भागोंमें बाँटा गया है। पहले भागमें दैनिक व्यवहारके अति प्रचलित शब्द तथा अत्यंत सरल वाक्य दिये गये हैं और दूसरे भागमें उससे आगेके शब्द तथा वाक्य। दोनों भागोंकी यह सामग्री सभी पुस्तकोंकी समान है। किन्तु तीसरे भागकी सामग्रीमें उस क्षेत्र विशेषके प्रसिद्ध-प्रसिद्ध स्थान, व्यक्ति, कविता, कहानी और मुहावरे-कहावतें आदि की जानकारी दी गयी है; ताकि विद्यार्थी उस प्रदेशसे भी थोड़ा परिचित हो सकें।

अ

राष्ट्रभाषाके पुराने कर्मी श्री. सिद्धनाथ पंतके सुझाव हम, मूल्यवान रहे हैं, प्रान्तीय भाषाओंकी परीक्षाओं चलानेका सुझाव अहम हमें प्राप्त हुआ। परीक्षाओंके लिये पाठ्यक्रम और तदनुरूप पुस्तकें तैयार करनेकी रूपरेखा तैयार करनेमें श्री रामेश्वरदयाल दुबेका सहयोग मिला उस रूपरेखाको क्रियान्वित करनेमें भिन्न-भिन्न कार्यकर्ताओंका भिन्न-भिन्न रूपमें सहयोग प्राप्त हुआ है। पुस्तकोंके लिये शब्दावली छांटनेमें श्री जमलुद्दीन तुरक तथा श्री अबोधजीने सहयोग दिया। प्रथम दो भागोंका हिंदी भाषा तैयार करनेमें श्री श्रीराम अट्टावलकरका सहयोग प्राप्त हुआ और सर्वश्री पं. मु. डांगरे तथा रा. वा. पाटीलने उसे ध्यानपूर्वक देखा। अनुवाद का तेलगु अंश श्री. क. म. शिवराम शर्माने तैयार किया। अतः जिन सबके प्रति समिति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती है।

आशा है, यह पुस्तक तेलगुके अध्ययन करनेवालोंके लिये उपयोगी सिद्ध होगी।

उमु ब्रायंडि।

मंत्री,

ठि नेचुकाँण्ड।

भाषा प्रचार समिति, वर्ध

# विषय सूची

## प्रथम भाग

### पाठ

|             |    |
|-------------|----|
| पाठ पहला    | १  |
| " दूसरा     | ५  |
| " तीसरा     | ८  |
| " चौथा      | ११ |
| " पाँचवाँ   | १३ |
| " छठा       | १५ |
| " सातवाँ    | १७ |
| " आठवाँ     | २० |
| " नवाँ      | २३ |
| " दसवाँ     | २७ |
| " ग्यारहवाँ | ३५ |
| " बारहवाँ   | ४१ |

## द्वितीय भाग

|                     |    |
|---------------------|----|
| पाठ १. परिचय        | ४९ |
| " २. खातिरदारी      | ५१ |
| " ३. बीमारसे बातचीत | ५३ |
| " ४. परिवारके लोग   | ५५ |
| " ५. मेरा नया घर    | ५९ |
| " ६. परिश्रम        | ६२ |

## तृतीय भाग

|                               |    |
|-------------------------------|----|
| पाठ १. आंध्र देश, भाषा और लोग | ६६ |
| " २. कृष्णदेव रायलु           | ६८ |
| " ३. त्यागराज ✓               | ७१ |
| " ४. श्री राम नवमी अत्सव      | ७३ |
| श्री त्यागराज कीर्तन .        | ७६ |
| " ५. श्री कालहस्ति ✓          | ७६ |
| " ६. राज राजनरेन्द्र          | ७९ |
| " ७. तिरुपति ✓                | ८१ |
| " ८. कण्णप्प नयनारु           |    |
| " ९. कहावतें                  |    |
| " १०. कविताओं                 |    |



# भारत-भारती

तॆलुगु

पाठ १ ला

नीवु ।

नीवु माटलाडु ।

नीवु चेयुमु ।

नीवु तिसिकॉनि रा ।

नीवु चदुवु ।

नीवु वॆळ्ळु ।<sup>१</sup>

नीवु तिनु ।

मीरु ।<sup>२</sup>

मीरु माटलाडंडि ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ ब्रायंडि ।

ॐ नेर्चुकाण्डि ।

तू ।

तू बोल ।

तू कर ।

तू ला ।

तू पढ़ ।

तू जा ।

तू खा ।

तुम ।

तुम बोलो ।

तुम करो ।

तुम लाओ ।

आपने ।

|                                                |                     |
|------------------------------------------------|---------------------|
| २ वॅळ्ळंडि ।                                   | तुम जाओ ।           |
| ६ तिनंडि ।                                     | तुम खाओ ।           |
| तमर ।                                          | आप ।                |
| तमर माटलाडंडि ।                                | आप बोलिअे ।         |
| तमर चेयंडि ।                                   | आप कीजिअे ।         |
| तमर तीसिकॉनि रंडि ।                            | आप लाअिअे ।         |
| तमर चदवंडि ।                                   | आप पढिअे ।          |
| तमर वॅळ्ळंडि ।                                 | आप जाअिअे ।         |
| तमर तिनंडि ।                                   | आप खाअिअे ।         |
| नीवु अक्कड रा । <sup>३</sup>                   | तू यहाँ आ ।         |
| नीवु अक्कड कूर्चो ।                            | तू वहाँ बैठ ।       |
| नीवु नीरु त्रागु ।                             | तू पानी पी ।        |
| नीवु पुस्तकमु तीसिको ।                         | तू पुस्तक ले ।      |
| नीवु वार्ता-पत्रिक अिम्मु ।                    | तू समाचार-पत्र दे । |
| नीवु बीगमु अिम्मु ।                            | तू चाभी दे ।        |
| नीवु तालमु तैरवुमु ।                           | तू ताला खोल ।       |
| नीवु बंति आडुम ।                               | तू गेंद खेल ।       |
| नीवु पाठमु त्रायुमु ।                          | तू सबक (पाठ) लिख ।  |
| नीवु मराठि नेर्चुकांतुमु ।                     | तू मराठी सीख ।      |
| नीवु मराठी नेर्पुमु ।                          | तू मराठी सिखा ।     |
| नीवु अरटि पंडु तिनि पालु त्रागु । <sup>४</sup> | तू केला खेळ ।       |
| नीरु अक्कड रंडि ।                              |                     |



|                                        |                           |
|----------------------------------------|---------------------------|
| मीरु अक्कड कूर्चाण्डि ।                | तुम वहाँ बैठो ।           |
| मीरु नीरु त्रागंडि ।                   | तुम पानी पिओ ।            |
| मीरु पुस्तकमु तीसिकाण्डि ।             | तुम पुस्तक लो ।           |
| मीरु वार्ता-पत्रिक अिव्वंडि ।          | तुम समाचार पत्र दो ।      |
| मीरु बीगमु अिव्वंडि ।                  | तुम चाभी दो ।             |
| मीरु ताळमु तैरवंडि ।                   | तुम ताला खोलो ।           |
| मीरु बंति आडंडि ।                      | तुम गेंद खेलो ।           |
| मीरु पाठमु चदवंडि ।                    | तुम सबक (पाठ) लिखो ।      |
| मीरु मराठि नेर्चुकाण्डि ।              | तुम मराठी सीखो ।          |
| मीरु मराठि नेर्पण्डि ।                 | तुम मराठी सिखाओ ।         |
| मीरु अरटि पंडु तिति<br>पालु त्रागंडि । | तुम केला खाओ और दूध पिओ । |
| तमरु अक्कड रंडि ।                      | आप यहाँ आअिओ ।            |
| तमरु अक्कड कूर्चाण्डि ।                | आप वहाँ बैठिओ ।           |
| तमरु नीरु त्रागंडि ।                   | आप पानी पीजिओ ।           |
| तमरु पुस्तकमु तीसिकाण्डि ।             | आप पुस्तक लीजिओ ।         |
| तमरु वार्ता-पत्रिक अिव्वंडि ।          | आप समाचार पत्र दीजिओ ।    |
| तमरु बीगमु अिव्वंडि ।                  | आप चाभी दीजिओ ।           |
| तमरु ताळमु तैरवंडि ।                   | आप ताला खोलिओ ।           |
| तमरु बंति आडंडि ।                      | आप गेंद खेलिओ ।           |
| तमरु पाठमु चदवंडि ।                    | आप सबक (पाठ) लिखिओ ।      |
| तमरु मराठि नेर्चुकाण्डि ।              | आप मराठी सीखिओ ।          |

तमरु मराठि नेर्पण्डि ।

तमरु अरटि पंडु तिति  
पालु त्रागंडि ।

आप मराठी सिखाअिअे ।

आप केला खाअिअे  
और दूध पीजिअे ।

टिप्पणियाँ: १. तैलुगु भाषामें 'अे' और 'ओ' के ह्रस्व रूप भी होते हैं। ह्रस्व रूप सूचित करनेके लिये हमने अक्वपरके ऊपर चिन्ह लगाया है। जैसे 'कै' के का ह्रस्व और 'कौ' को का ह्रस्व।

२. मीरु सदा बहुतोंके प्रति अथवा आदर सूचक बनकर अेक के प्रति प्रयुक्त होता है। अेकके प्रति सामान्य रूपसे "नीवु" का ही प्रयोग होता है। 'तू' में जो निष्कृष्टता है वह "नीवु" में नहीं है। जहाँ-जहाँ "तुम" अेकके प्रति प्रयुक्त होता है वहाँ "नीवु" का ही प्रयोग अुचित है। "तमरु", "मीरु"से कुछ अधिक आदर सूचित करता है। यह अेक या अनेकके प्रति अुपयुक्त होता है।

३. अकार वाले व्यंजनोंका सदा (शब्दके अन्तमें आनेपर भी) पूरा अुच्चारण करना आवश्यक है। "अिक्कड़" का "अिक्कड्" जैसा अुच्चारण गलत होगा।

४. "केला खाओ और दूध पिओ" का रूप "केला खाकर दूध पिओ" ही होता है। "और" का अनुवाद करनेपर वाक्य भद्दा बन जायेगा।



## पाठ २ रा

अितडु, वीडु<sup>१</sup>

ओमँ

अदि

वीडु अँवडु<sup>२</sup>?

अितडु रामुडु ।

ओमँ बालिक ।

अदि नीरु ।

अदि पुष्पमु ।

अतडु, वाडु ।

आमँ ।

अदि ।

वाडु अँवडु ? ✓

अतडु रामुडु ।

आमँ बालिक ।

अदि चँट्टु ।

अदि अल्लु ।

अदि मंचि पनि ।

अदि मंचि पुस्तकमु ।

अदि अंदमैन पँट्टु ।

आवययोगि बालुडु ।

गि बालिक ।

रामंतुडेन विद्यार्थि ।

यह

यह

यह

यह कौन है ?

यह राम है ।

यह लड़की है ।

यह पानी है ।

यह फूल है ।

वह ।

वह ।

वह ।

वह कौन है ?

वह राम है ।

वह लड़की है ।

वह पेड़ है ।

वह घर है ।

यह अच्छा काम है ।

वह अच्छी पुस्तक है ।

यह सुंदर संदूक है ।

वह बीमार लड़का है ।

वह बीमार लड़की है ।

वह होशियार विद्यार्थी है ।

वाडु चातुर्यमु गल व्यापारि ।  
 वाडु बीद मनुष्युडु ।  
 अतडु धनिकुडेन नायकुडु ।  
 अदि पेंद अल्लु ।  
 अदि पेंद पाठशाल ।  
 अदि चिन्न कागितमु ।  
 आमँ चिन्न बालिक ।  
 अदि वेडि पालु ।  
 अदि चल्लनि नीरु ।  
 अदि चल्लनि तेनीरु ।  
 ओ पनि मंचिदि ।  
 आ बालिक बुद्धिमंतँ ।  
 आ मनुष्युडु बीद ।  
 ओ कागितमु चिन्नदि ।  
 ओ पुस्तकमु मंचिदि ।  
 अदि विद्यार्थियाँकक पनि ।  
 अदि अुपाध्यायुल पुस्तकमु ।  
 अदि व्यापारि याँकक अल्लु ।  
 अदि पेंदँ याँकक ताळमु ।  
 अदि ताळमु याँकक बीगमु ।  
 अवि मंचि पनुलु ।  
 अवि मंचि पुस्तकमुलु ।  
 अवि अंदमैन पेंदँलु ।  
 वीरु रोगि वालकुलु ।  
 वीरु रोगि बालिकलु ।

वह चतुर सौदागर है ।  
 वह गरीब आदमी है ।  
 वह अमीर नेता है ।  
 वह बड़ा घर है ।  
 यह बड़ी पाठशाला है ।  
 यह छोटा कागज है ।  
 वह छोटी लड़की है ।  
 वह गरम दूध है ।  
 यह ठंडा पानी है ।  
 वह ठंडी चाय है ।  
 यह काम अच्छा है ।  
 वह लड़की होशियार है ।  
 वह आदमी गरीब है ।  
 यह कागज छोटा है ।  
 यह पुस्तक अच्छी है ।  
 यह विद्यार्थीका काम है ।  
 वह शिक्षककी पुस्तक है ।  
 वह व्यापारीका घर है ।  
 यह संदूकका ताला है ।  
 यह तालेकी चाभी है ।  
 ये अच्छे काम हैं ।  
 ये अच्छी पुस्तकें हैं ।  
 ये सुन्दर संदूक हैं ।  
 ये बीमार लड़के हैं ।  
 ये बीमार लड़कियाँ हैं ।



|                                     |                             |
|-------------------------------------|-----------------------------|
| वारु बुद्धिमंतुलैन विद्यार्थुलु ।   | वे होशियार विद्यार्थी हैं । |
| वारु चातुर्यमुगल व्यापारुलु ।       | वे चतुर व्यापारी हैं ।      |
| वीरु बीद मनुष्युलु ।                | ये गरीब आदमी हैं ।          |
| वारु धनिकुलैन नायकुलु ।             | वे अमीर नेता हैं ।          |
| अवि पेंदु अिङ्लु ।                  | वे बड़े घर हैं ।            |
| अवि पेंदु पाठशाललु ।                | ये बड़ी पाठशालाओं हैं ।     |
| अवि चिन्न कागितमुलु ।               | वे छोटे कागज हैं ।          |
| ओ अुपाध्यायुलु मंचिवारु ।           | ये शिक्षक अच्छे हैं ।       |
| ओ व्यापारुलु चातुर्यमुगलवारु ।      | ये व्यापारी चतुर हैं ।      |
| आ बालुरु बुद्धिमंतुलु ।             | वे लड़के होशियार हैं ।      |
| ओ कागितमुलु चिन्नवि ।               | ये कागज छोटे हैं ।          |
| ओ पुस्तकमुलु मंचिवि ।               | ये पुस्तकें अच्छी हैं ।     |
| अवि अुपाध्यायुलुयाँक्क पुस्तकमुलु । | ये शिक्षककी पुस्तकें हैं ।  |
| अवि व्यापारुलु अिङ्लु ।             | ये व्यापारीके घर हैं ।      |
| ओ ताळमुलु पेंदुयाँक्कवि ।           | ये ताले संदूकके हैं ।       |
| ओ बीगमुलु ताळमुनवि ।                | ये चाभियाँ तालेकी हैं ।     |
| वारु भारतदेशपु नायकुलु ।            | वे भारतके नेता हैं ।        |

**टिप्पणियाँ :** १. अन्य पुरुष सर्व नामके तीन भेद हैं : पुरुष, स्त्री और अमहद्वाचक । अतडु या वाडु (वह) पुरुष बोधक है : 'आमें' स्त्री बोधक है । 'अदि' छोटे शिशु या जानवर, जीव जन्तु अथवा निर्जीव वस्तुओंका बोधक है । अमहद्वाचकको नपुंसक लिंग मानना ठीक नहीं है ।

२. अिन तँलुगु वाक्योंमें क्रियाका प्रयोग नहीं होता है । फिर भी वाक्य अधूरे नहीं हैं ।

## पाठ ३ रा

|                                  |                      |
|----------------------------------|----------------------|
| नेनु अुन्नानु ।                  | में हूँ ।            |
| नीवु अुन्नावु ।                  | तू है ।              |
| वाडु अुन्नाडु (पुं) ।            | वह है ।              |
| आमँ अुन्नदि (स्त्री) ।           | ”                    |
| अदि अुन्नदि (अमहत्) ।            | ”                    |
| वीडु अुन्नाडु (पुं) ।            | यह है ।              |
| ओमँ अुन्नदि (स्त्री) ।           | ”                    |
| अिदि अुन्नदि (अमहत्) ।           | ”                    |
| * मेमु अुन्नामु; मनमु अुन्नामु । | हम हैं ।             |
| मीरु अुन्नारु ।                  | तुम हो ।             |
| वारु अुन्नारु (पुं-स्त्री) ।     | वे हैं ।             |
| अवि अुन्नवि (अमहत्) ।            | ”                    |
| वीरु अुन्नारु (पुं-स्त्री) ।     | ये हैं ।             |
| अिवि अुन्नवि (अमहत्) ।           | ”                    |
| तमरु अुन्नारु ।                  | आप हैं ।             |
| नेनु बालुडु ।                    | मैं लड़का हूँ ।      |
| नेनु विद्यार्थि ।                | मैं विद्यार्थी हूँ । |
| नेनु बालिक ।                     | मैं लड़की हूँ ।      |

\* दक्षिणी भाषाओंमें “हम” के दो रूप हैं । अकमें मध्यम पुरुष सम्मिलित नहीं है (मेमु) दूसरेमें सम्मिलित है (मनमु) ।



|                                                                    |                     |
|--------------------------------------------------------------------|---------------------|
| नेनु बुद्धिमंतुडु ।                                                | में होशियार हूँ ।   |
| नीवु रोगि ।                                                        | तू बीमार है ।       |
| अदि पुस्तकमु ।                                                     | वह पुस्तक है ।      |
| अिदि अेमि ?                                                        | यह क्या है ?        |
| अिदि पाठमु ।                                                       | यह पाठ है ।         |
| अिदि पाठशाल ।                                                      | यह पाठशाला है ।     |
| मेमु-मनमु विद्यार्थुलु ।                                           | हम विद्यार्थी हैं । |
| मेमु-मनमु बुद्धिमंतुलु ।                                           | हम होशियार हैं ।    |
| मेमु-मनमु अिक्कड अुन्नामु ।                                        | हम यहाँ हैं ।       |
| मीरु अँवरु ?                                                       | तुम कौन हो ?        |
| मीरु अँक्कड अुन्नारु ?                                             | तुम कहाँ हो ?       |
| मीरु वालुरु ?                                                      | तुम लड़के हो ?      |
| मीरु बालिकलु ।                                                     | तुम लड़कियाँ हो ।   |
| अवि पुस्तकमुलु ।                                                   | वे पुस्तकें हैं ।   |
| वारु अपाध्यायुलु ।                                                 | वे अध्यापक हैं ।    |
| वारु भाषण-कर्तलु ।                                                 | वे वक्ता हैं ।      |
| अिवि रँण्डु अिड्लु ।                                               | ये दो घर हैं ।      |
| अिवि पंड्लु ।                                                      | ये फल हैं ।         |
| ✓अिवि चिन्न कागितमुलु ।                                            | ये छोटे कागज हैं ।  |
| तमरु प्राध्यापकुला ?                                               | आप प्राध्यापक हैं ? |
| तमरु विद्यार्थुलु ।                                                | आप विद्यार्थी हैं । |
| ✓तमरु वागुन्नारु ।                                                 | आप अच्छे हैं ।      |
| लेदु ।                                                             | नहीं ।              |
| वाडु अिक्कड लेडु; (पुं.)आमँ-<br>अदि अिक्कड लेदु (स्त्री व अमहत्) । | } वह यहाँ नहीं है । |

|                                     |                           |
|-------------------------------------|---------------------------|
| ✓ नेनु विद्यार्थि कानु ।            | मैं विद्यार्थी नहीं हूँ । |
| मेमु-मनमु सोमरुलु कामु ।            | हम आलसी नहीं हैं ।        |
| मीरु रोगि कारु ।                    | तुम बीमार नहीं हो ।       |
| तमरु बीद कारु ।                     | आप गरीब नहीं हैं ।        |
| ✓ अितडु बुद्धिमंतुडु काडु (पुं.)    | यह होशियार नहीं है ।      |
| ✓ ओमँ-बुद्धिमंतँ कादु (स्त्री) ।    |                           |
| अिवि अंदमैनवि कावु ।                | ये सुन्दर नहीं हैं ।      |
| ✓ वारु अिवकड़ लेरु (पुं. व स्त्री.) | } वे यहाँ नहीं हैं ।      |
| ✓ अवि अिवकड़ लेवु (अमहत्) ।         |                           |

**टिप्पणी :** ध्यान देनेकी बात है कि तँलुगुमें अेकवचनमें स्त्रीलिंग और नपुंसक लिंगकी क्रियाओंका अंक-सा रूप और बहुवचनमें पुल्लिंग और स्त्रीलिंगकी क्रियाओंका अेकसा रूप होता है ।

---



## पाठ ४ था

नेनु वच्चु चुन्नानु ।  
 नीवु वच्चुचुन्नावु ।  
 वाडु वच्चुचुन्नाडु ।  
 वीडु वच्चुचुन्नाडु ।  
 मेमु-मनमु वच्चुचुन्नामु ।  
 मीरु वच्चुचुन्नारु ।  
 वारु वच्चुचुन्नारु ।  
 वीरु वच्चुचुन्नारु ।  
 तमरु वच्चुचुन्नारु ।  
 नेनु वच्चुचुन्नानु ।  
 नीवु वच्चुचुन्नावु ।  
 आमँ वच्चुचुन्नदि ।  
 अमीँ वच्चुचुन्नदि ।  
 मेमु-मनमु वच्चुचुन्नामु ।  
 मीरु वच्चुचुन्नारु ।  
 वारु वच्चुचुन्नारु ।  
 वीरु वच्चुचुन्नारु ।  
 तमरु वच्चुचुन्नारु ।  
 अदि वच्चुचुन्नदि ।  
 अदि वच्चुचुन्नदि ।  
 अवि वच्चुचुन्नवि ।  
 अवि वच्चुचुन्नवि ।

में आता हूँ ।  
 तू आता है ।  
 वह आता है ।  
 यह आता है ।  
 हम आते हैं ।  
 तुम आते हो ।  
 वे आते हैं ।  
 ये आते हैं ।  
 आप आते हैं ।  
 मैं आती हूँ ।  
 तू आती है ।  
 वह आती है ।  
 यह आती है ।  
 हम आती हैं ।  
 तुम आती हो ।  
 वे आती हैं ।  
 ये आती हैं ।  
 आप आती हैं ।

अमहत् : वह आता है-वह आती है ।  
 यह आता है-यह आती है ।  
 वे आते हैं-वे आती हैं ।  
 ये आते हैं-ये आती हैं ।

सोदरुडु बयट आडुकॉनुचुन्नाडु । भाभी बाहर खेलता है ।  
 सोदरि लोपल आडुकॉनुचुन्नदि । वहन भीतर खेलती है ।  
 आ बालुडु अेमि चैयुचुन्नाडु ? वह बालक क्या करता है ?  
 आ विद्यार्थि पुस्तकमु चदुवुचुन्नाडु । वह विद्यार्थी किताब पढ़ता है ।  
 अुपाध्यायुलु अेमि-चैयुचुन्नारु ? अध्यापक क्या करते हैं ?  
 वारु हिन्दि नेर्पुचुन्नारु । वे हिन्दी पढ़ाते हैं ।  
 नीवु अेल अेडुचु चुन्नावु ? तू क्यों रोता है ?  
 नेनु अेडुव लेदु, नव्वुचुन्नानु । मैं नहीं रोता, हँसता हूँ ।  
 मीरु प्रति दिनमु अँन्नि गंटलकु लेचु चुन्नारु ? तुम रोज कितने वजे अुठते हो ?  
 वीडु प्रति दिनमु आरु गंटलकु लेचु चुन्नाडु । यह रोज छः वजे अुठता है ।  
 मेमु-मनमु पदिगंटल वरकु पनि चैयुचुन्नामु । हम दस वजेतक काम करते हैं ।  
 मेमु-मनमु अिक्कड वसिचु चुन्नामु । हम यहाँ रहते हैं ।  
 मीरु अँक्कड वसिचु चुन्नारु ? तुम कहाँ रहती हो ?  
 मीरु हिन्दि नेर्चुकाँण्डि । तुम हिन्दी सीखो ।  
 मीरु ओ पाठमु चदुवंडि । तुम यह पाठ पढ़ो ।  
 मेमु-मनमु हिन्दि नेर्चुकाँनु चुन्नामु । हम हिन्दी सीखते हैं ।

टिप्पणी : तेलुगुमें अुत्तम और मध्यम पुरुषोंमें क्रियाका रूप लिगके कारण नहीं बदलता ।



## पाठ ५ वाँ

|                                   |                             |
|-----------------------------------|-----------------------------|
| नेनु वच्चुचु अन्नानु ।            | मैं आ रहा हूँ ।             |
| नीवु वच्चुचु अन्नावु ।            | तू आ रहा है ।               |
| वाडु वच्चुचु अन्नाडु ।            | वह आ रहा है ।               |
| वीडु वच्चुचु अन्नाडु ।            | यह आ रहा है ।               |
| मेमु-मनमु वच्चुचु अन्नामु ।       | हम आ रहे हैं ।              |
| मीरु वच्चुचु अन्नारु ।            | तुम आ रहे हो ।              |
| वारु वच्चुचु अन्नारु ।            | वे आ रहे हैं ।              |
| तमरु वच्चुचु अन्नारु ।            | आप आ रहे हैं ।              |
| नेनु वच्चुचु अन्नानु ।            | मैं आ रही हूँ ।             |
| नीवु वच्चुचु अन्नावु ।            | तू आ रही है ।               |
| आमँ वच्चुचु अन्नदि ।              | वह आ रही है ।               |
| ओमँ वच्चुचु अन्नदि ।              | यह आ रही है ।               |
| मेमु-मनमु वच्चुचु अन्नामु ।       | हम आ रही हैं ।              |
| मीरु वच्चुचु अन्नारु ।            | तुम आ रही हो ।              |
| वारु वच्चुचु अन्नारु ।            | वे आ रही हैं ।              |
| वीरु वच्चुचु अन्नारु ।            | ये आ रही हैं ।              |
| तमरु वच्चुचु अन्नारु ।            | आप आ रही हैं ।              |
| अदि वच्चुचु अन्नदि (अमहत्) ।      | वह आ रहा है—वह आ रही है ।   |
| अिदि वच्चुचु अन्नदि ।             | यह आ रहा है—यह आ रही है ।   |
| अवि वच्चुचु अन्नवि ।              | वे आ रहे हैं—वे आ रही हैं । |
| अिवि वच्चुचु अन्नवि ।             | ये आ रहे हैं—ये आ रही हैं । |
| मीरु अँन्दुकु परुगिडुचु अन्नारु ? | तुम क्यों दौड़ रहे हो ?     |
| पिल्लि पालु त्रागुचु अन्नदि ।     | बिल्ली दूध पी रही है ।      |

✓ चाडु बंडि तोलुचु अन्नाडु । वह गाड़ी चला रहा है ।  
 ✓ अँवरु पिलुचुचु अन्नारु ? कौन बुला रहा है ?  
 तमरु अँककड पोवुचु अन्नारु ? आप कहाँ जा रहे हैं ?  
 बालिक नव्वुचु अन्नदि । लड़की हँस रही है ।  
 मेमु-मनमु हिन्दी चदुवुचु अन्नामु । हम हिन्दी सीख रही हैं ।  
 ✓ वाडु अटु अटु तिरुगुचु अन्नाडु । वह अधर अधर घूम रहा है ।  
 नेनु वयट पोवुचु अन्नानु । मैं बाहर जा रही हूँ ।  
 अुपाध्यायुलु पाठमु नेर्पुचु अन्नारु । अध्यापक पाठ सिखा रहे हैं ।  
 व्यापारि धनमु सम्पादिचुचु अन्नाडु । व्यापारी पैसा कमा रहा है ॥  
 वाडु पँटु धरकु तीसिकाँनुचु अन्नाडु । वह संदूक खरीद रहा है ।  
 वारु स्नानमु चेयुचु अन्नारु । वे नहा रहे हैं ।  
 ✓ वीरु तेनीरु त्रागुचु अन्नारु । ये चाय पी रहे हैं ।  
 भाषण कर्त अुपन्यसिचुचु अन्नाडु । वक्ता भाषण दे रहा है ।  
 वाडु पँटु याँक्क तालमु तँरुचुचु  
 अन्नाडु । वह संदूकका ताला खोल रहा है ।  
 अी बालुडु पटमु चूचुचुन्नाडु । यह लड़का चित्र देख रहा है ।  
 मीरु जावु ब्रायुचु अन्नारा ? क्या आप चिट्ठी लिख रहे हैं ?  
 कादंडि, नेनु पाठमु ब्रायुचु अन्नानु । जी नहीं, मैं पाठ लिख रहा हूँ ।  
 आमँ कूड ब्रायुचुन्नदि । वह भी लिख रही है ।  
 वाडु माटलाडडु ; या माटलाडुट लेदु । वह नहीं बोलता ।  
 वीडु माटलाडु चुंड लेदु । यह नहीं बोल रहा है ।  
 नेनु पोनु या पोवुट लेदु । मैं नहीं जाती ।  
 नेनु आटलाडु चुंड लेदु । मैं नहीं खेल रही हूँ ।  
 वारु तेनीरु त्रागरु या त्रागुट लेदु । वे चाय नहीं पीते ।

**टिप्पणी :** तँलुगुमें वस्तुतः सामान्य वर्तमान और तात्कालिक वर्तमानके रूप अँकसे ही हैं ।



*Pulur Tenge.*

## पाठ ६ वाँ

|                                |                     |
|--------------------------------|---------------------|
| नेनु वच्चुदुनु ।               | में आअूंगा ।        |
| नीवु वच्चुदुवु ।               | तू आअेगा ।          |
| वाडु वच्चुनु ।                 | वह आअेगा ।          |
| वीडु वच्चुनु ।                 | यह आअेगा ।          |
| मेमु-मनमु वच्चुदुमु ।          | हम आअेंगे ।         |
| मीरु वच्चुदुरु ।               | तुम आओगे ।          |
| वारु वच्चुदुरु ।               | वे आअेंगे ।         |
| वीरु वच्चुदुरु ।               | ये आअेंगे ।         |
| तमरु वच्चुदुरु ।               | आप आअेंगे ।         |
| तेनु वच्चुदुनु ।               | में आअूंगी ।        |
| नीवु वच्चुदुवु ।               | तू आअेगी ।          |
| आमँ वच्चुनु ।                  | वह आअेगी ।          |
| आमँ वच्चुनु ।                  | यह आअेगी ।          |
| मेमु-मनमु वच्चुदुमु ।          | हम आअेंगी ।         |
| मीरु वच्चुदुरु ।               | तुम आओगी ।          |
| वारु वच्चुदुरु ।               | वे आअेंगी ।         |
| वीरु वच्चुदुरु ।               | ये आअेंगी ।         |
| तमरु वच्चुदुरु ।               | आप आअेंगी ।         |
| अदि वच्चुनु (अमहत्) ।          | वह आअेगा-आअेगी ।    |
| अदि वच्चुनु ।                  | यह आअेगा-आअेगी ।    |
| अवि वच्चुनु ।                  | वे आअेंगे-आअेंगी ।  |
| अवि वच्चुनु ।                  | ये आअेंगे-आअेंगी ।  |
| मीरु आी रोजु अँक्कड पोवुदुरु ? | तुम आज कहाँ जाओगे ? |

|                                         |                                    |
|-----------------------------------------|------------------------------------|
| नेनु रेपु तप्पक पोवुदुनु ।              | मैं कल जरूर जाऊंगा ।               |
| मीरु अेमि अेमि तिंदुरु ?                | तुम क्या क्या खाओगे ?              |
| नेनु पप्पु अन्नं गोधुम-राट्टं तिंदुनु । | मैं दाल भात, गेहूँकी रोटी खाऊंगा । |
| तमरु बयट बच्चंदरा ?                     | आप बाहर चलेंगे ?                   |
| नेनु वस्त्रमु काँन्दुनु ।               | मैं कपड़ा खरीदूंगा ।               |
| ओ चिन्न बालुडु अेमि तिननु ?             | यह छोटा बालक क्या खायेगा ?         |
| वाडु अेमियु तिनडु ।                     | वह कुछ नहीं खायेगा ।               |
| मीरु रँण्डु रूपायलु अिच्चंदरा ?         | आप दो रुपये देंगे ?                |
| लेदंडि नेनु अिव्वनु ।                   | जी नहीं, मैं नहीं दूंगा ।          |
| मेमु-मनमु चित्रमु चूचुदुमु ।            | हम चित्र देखेंगे ।                 |
| मीरु वच्चंदरा, चूचंदरा ?                | तुम चलोगे और देखोगे ?              |
| नेनु पाठमु रेपु चटुवुदुनु ।             | मैं पाठ कल पढ़ूंगी ।               |
| नेनु पाठमु रेपु नेर्पुदुनु ।            | मैं पाठ कल सिखाऊंगा ।              |
| वाडु पदि गंटलकु निद्रपोवुनु ।           | वह दस बजे सोयेगा ।                 |
| नेनु अिक्कड़ अुंडनु ।                   | मैं यहाँ नहीं रहूंगा ।             |
| मेमु-मनमु पाट पाडुदुमु ।                | हम गाना गाएँगे ।                   |
| नेनु नायकुडु अगुदुनु ।                  | मैं नेता बनूंगा ।                  |
| मेमु-मनमु भाषण कर्तलु अगुडुमु ।         | हम वक्ता बनेँगे ।                  |
| मीरु अुपाध्यायलु अगुदुरु ।              | तुम अध्यापक बनोगे ।                |
| वारु कूड अुपाध्यायलु अगुदुरु ।          | वे भी अध्यापक बनेँगे ।             |
| मीरु मामिडि पंडु                        | तुम आम लोगी ?                      |
| तीसिकाँनंदरा ?                          |                                    |
| मेमु-मनमु कूड तीसिकोमु ।                | हम भी नहीं लेंगी ।                 |
| वारु अिक्कड़ रारु ।                     | वे यहाँ नहीं आएँगी ।               |



## पाठ ७ वाँ *Past Continuing*

[ अडव पाठम् ]

|                             |                        |
|-----------------------------|------------------------|
| नेनु वच्चुचुंटिनि ।         | मैं आ रहा था ।         |
| नीवु वच्चुचुंटिवि ।         | तू आ रहा था ।          |
| वाडु वच्चुचुंडेंनु ।        | वह आ रहा था ।          |
| वीडु वच्चुचुंडेंनु ।        | यह आ रहा था ।          |
| मेमु—मनमु वच्चुचुंटिमि ।    | हम आ रहे थे ।          |
| मीरु वच्चुचुंडिरि ।         | तुम आ रहे थे ।         |
| वारु वच्चुचुंडिरि ।         | वे आ रहे थे ।          |
| वीरु वच्चुचुंडिरि ।         | ये आ रहे थे ।          |
| तमरु वच्चुचुंडिरि ।         | आप आ रहे थे ।          |
| नेनु वच्चुचुंटिनि ।         | मैं आ रही थी ।         |
| नीवु वच्चुचुंटिवि ।         | तू आ रही थी ।          |
| आमँ वच्चुचुंडेंनु ।         | वह आ रही थी ।          |
| ओमँ वच्चुचुंडेंनु ।         | यह आ रही थी ।          |
| मेमु—मनमु वच्चुचुंटिमि ।    | हम आ रही थीं ।         |
| मीरु वच्चुचुंडिरि ।         | तुम आ रही थीं ।        |
| वारु वच्चुचुंडिरि ।         | वे आ रही थीं ।         |
| वीरु वच्चुचुंडिरि ।         | ये आ रही थीं ।         |
| तमरु वच्चुचुंडिरि ।         | आप आ रही थीं ।         |
| अदि वच्चुचुंडेंनु (अमहत्) । | वह आ रहा था—आ रही थी । |
| अदि वच्चुचुंडेंनु ।         | यह आ रहा था—आ रही थी । |

अवि वच्चुचुंडेंनु ।  
 अवि वच्चुचुंडेंनु ।  
 तमरु अेमि अडुगुचुंडिरि ?  
 नेनु आँक प्रश्न अडुगुचुंडिति ।  
 वाडु प्रश्न समाधानमु  
 चेयुचुंडेंनु ।

दर्जि वस्त्रमुलु कुट्टुचुंडेंनु ।  
 मीरु वस्त्रमुलु अतुकुचुंडिरि ।  
 मेमु कवड्डि आडुचुंडिमि ।  
 तमरु अँन्नि गंटलकु  
 आडुचुंडिरि ?

आमँ अपुन्यासिचुचुंडेंनु ।  
 नीवु पोवु चुंडिवा ?  
 ओमँ अेमि तीसिकाँनु चुंडेंनु ?  
 नेनु हिन्दी नेर्चुकाँनुचुंडिति ।  
 वारु अपुन्यासमु विनुचुंडिरि ।  
 मीरु अेल परिगिडु चुंडिरि ?  
 तम पनि जरुगुचुंडेंनु ।  
 वाडु अेमो चँप्पु चुंडेंनु ।  
 वीरु अेल नव्वुचुंडिरि ?  
 वारु पुस्तकमु चद्रुवु चुंडिरि ।  
 आमँ पुस्तकमु अडुगु चुंडेंनु ।  
 नेनु नीरु त्रागुचुंडिति ।  
 अपाध्यायुलु प्रश्न अडुगुचुंडिरि,  
 (मरियु) विद्यार्थुलु  
 अुत्तरमिच्चुचुंडिरि ।

वे आ रहे थे—आ रही थीं ।  
 ये आ रहे थे—आ रही थीं ।  
 आप क्या पूछ रही थीं ?  
 मैं अेक प्रश्न पूछ रही थी ।

वह सवाल हल कर रहा था ।

दर्जी कपड़े सी रहा था ।  
 तुम कपड़े धो रहे थे ।  
 हम कवड्डी खेल रहे थे ।

आप कितने बजे खेल रहे थे ?

वह व्याख्यान दे रही थी ।

क्या तू जा रहा था ?

यह क्या ले रही थी ?

मैं हिन्दी सीख रहा था ।

वे भाषण सुन रहे थे ।

तुम क्यों दौड़ रहे थे ?

आपका काम हो रहा था ।

वह कुछ कह रहा था ।

ये क्यों हँस रही थीं ?

वे पुस्तक पढ़ रही थीं ।

वह पुस्तक माँग रही थी ।

मैं पानी पी रही थी ।

अध्यापक प्रश्न पूछते थे,

और विद्यार्थी जवाब देते थे ।



बालकुडु बट्टलु उतुकुचुडेंनु ।

(मरियु) बालिक बट्टलु  
कुट्टुचुडेंनु ।

नेनु अेमियु चेंप्पुचुंडलेदु ।

आमँ नव्वुचुंड लेदु ।

नीवु अक्कड़ लेवु ।

मेमु-मनमु अक्कड़ लेमु ।

वारु पुस्तकमु चदुवुचुंड लेदु ।

वीरु अपन्यासमु विनुचुंड लेदु ।

मीरु माटलाडु चुंड लेदु ।

तमरु नव्वुचुंड लेदु ।

लड़का कपड़े धोता था ।

और लड़की कपड़े सीती थी ।

मैं कुछ नहीं कह रहा था ।

वह नहीं हँस रही थी ।

तू वहाँ नहीं था ।

हम यहाँ नहीं थे ।

वे पुस्तक नहीं पढ़ती थीं ।

ये भाषण नहीं सुनती थीं ।

तुम नहीं बोलते थे ।

आप नहीं हँस रहे थे ।

-----

## पाठ ८ वाँ

### [ अँनिमिदव पाठमु ]

|                                     |                                |                               |
|-------------------------------------|--------------------------------|-------------------------------|
| 1 कर्ता                             | डु. मु. वु. लु                 | ०. ने                         |
| 2 कमं                               | नि. नु.                        | ०. को                         |
| 3 करण                               | चेत. तोड़. तो                  | से                            |
| 4 सम्प्रदान                         | काँरकु. कै                     | को                            |
| 5 अपादान                            | वलन. कंटें. पट्टि              | से                            |
| 6 सम्बन्ध                           | किः कुः याँक्क                 | का. की. के                    |
| 7 अधिकरण                            | अन्दु. लो. मीद. पै.            | में. पर                       |
| नेनु तमकु नेपुंदुनु ।               |                                | मैं आपको पढ़ाऊँगा ।           |
| वाडु मिम्मलुनु पिलुचुनुनाडु ।       |                                | वह तुमको बुलाता है ।          |
| नेनु वारिनि अँरुगुदुनु ।            |                                | मैं अनुको जानती हूँ ।         |
| नेनु कलमुतो व्रायुचुन्नानु ।        |                                | मैं कलमसे लिख रहा हूँ ।       |
| वाडु कत्तितो कूर                    |                                | वह चाकूसे तरकारी काटता है ।   |
| कायलु कोयुचुनुनाडु ।                |                                |                               |
| * वारु दाँडगलकु भय पडँदरु ।         |                                | वे चोरोंसे डरते हैं ।         |
| मेमु तमकु पुस्तकमु तप्पक अित्तुमु । |                                | हम आपको पुस्तक अवश्य देंगे ।  |
| आमँ गुरंमुनु पट्टुकाँनुचु अन्नदि ।  |                                | वह घोड़ेको पकड़ रही है ।      |
| मानवुनिकटँ प्रपंचमुलो पँद अँवरु?    |                                | मानवसे दुनियामें बड़ा कौन है? |
| काँय्य (करँ) तो अये वस्तु-          |                                | लकड़ीसे कौन कौनसी चीजें       |
| वुलु चयवडुनु ?                      |                                | बनती हैं ?                    |
| वानिदग्गरनुंडि नेनु रँण्डु रूपायलु  |                                |                               |
| तीसिकोवलनु ।                        |                                | अससे मुझे दो रुपए लेने हैं ।  |
| * हिन्दीमें 'चोरोंसे' अपादान        | कारक है पर तेलुगुमें 'दाँडगलकु |                               |
| सम्प्रदान कारक है ।                 |                                |                               |



आवु पालु अँक्कड़ दारकुनु ?

अदि चँट्टुयाँक्क आकु ।

अदि गुलावि माँग ।

अदि गाँट्टुपु नीरु ।

पाठशाल लो विद्यार्थुलु चदिवँदरु ।

नेनु मंचमुपे निदुर पोतानु ।

वाडु कागितमु पै कलमुतो अेमि  
ब्रायुचुन्नाडु ?

कंटितो चूडंडि (मरियु)

चँवलतो विनंडि ।

अटिलो विय्यमु लेदु ।

✓ पुस्तकमु याँक्क धर अेमि ?

तमकु डव्वु रेपु अित्तुमु ।

तेनीटिकंट पालु मेलु ।

मनिषिनि अिक्कड़ पिलवु ।

विद्यार्थिकि अेमि कावलयुनु ?

मनमु कंडलतो चूचँदमु

मरियु चँवलतो विनँदमु ।

पुस्तकमुल धर अँक्कुव ।

पुष्पमुल सुगन्धि मंचिदि ।

पालुनुंचि पँरुगु कलुगु (चेयवडु)  
चुन्नदि ।

✓ शक्ति कंट बुद्धि श्रेष्ठमैनदि ।

मेमु—मनमु बालुरकु मिठाअि  
अित्तुमु ।

नेनु विद्यार्थुलकु नेर्पुदुनु ।

नेनु कूड बालिकलकु नेर्पुदुनु ।

गायका दूध कहाँ मिलेगा ?

यह पेड़का पत्ता है ।

वह गुलाबकी कली है ।

यह नलका पानी है ।

पाठशालामें विद्यार्थी पढ़ते हैं ।

मैं चारपाओपर सोता हूँ ।

वह कागजपर कलमसे क्या लिख  
रहा है ?

आँखसे देखो और कानसे सुनो ।

घरमें चावल नहीं है ।

पुस्तकका दाम क्या है ?

आपको पैसा कल देंगे ।

चायसे दूध अच्छा ।

आदमीको यहाँ बुलाओ ।

विद्यार्थीको क्या चाहिए ?

हम आँखोंसे देखते हैं

और कानोंसे सुनते हैं ।

पुस्तकोंका दाम अधिक है ।

फूलोंकी सुगन्धि अच्छी है ।

दूधसे दही बनता है ।

शक्तिसे बुद्धि श्रेष्ठ है ।

हम लड़कोंको मिठाओ देंगे ।

मैं विद्यार्थियोंको पढ़ाऊँगा ।

मैं भी लड़कियोंको पढ़ाऊँगी ।

मीरु नेडु अध्ययनमु चेसितिरा ? तुमने आज अध्ययन किया ?  
 तमरु कथ विन्नारा ? आपने कहानी सुनी ?  
 गुरुवुगारु रँण्डु पाठमुलु नेप्पिरि । गुरुजीने दो पाठ पढ़ाये ।  
 वाडु नालुगु लड्डुलु तिनैनु । उसने चार लड्डू खाये ।  
 वीडु हिन्दी लो कवित ब्रासैनु । उसने हिन्दीमें कविता लिखी ।  
 नेनु चन्नौर त्रागिनानु । मैंने ठंडा पानी पिया ।

टिप्पणियाँ : तँलुगु कर्तृवाचक चिन्ह केवल संज्ञाओंके अन्तिम अवसर सूचित करते हैं । 'ने' जैसे विशेष कारक चिन्ह नहीं हैं ।

कर्म कारक चिन्ह : कुछ शब्दोंके साथ नि जुड़ता है, कुछ के साथ नु :  
 रामुनि-रामको; सीतनु-सीताको; करण कारक 'चेत' साधन सूचित करता है । 'तोड' और 'तो' दोनों समानार्थक हैं । ये साधनके अलावा "साथ" सा अर्थ भी सूचित करते हैं : रामसे बोलो-रामुनितो माटलाडु ।

सम्प्रदान : 'कि' या 'कु' 'को' के अर्थमें और कॉरकु 'के लिये' के अर्थमें आते हैं ।

अपादान : से के तीन अर्थ हैं : कारण सूचक से का 'वलन', तुलनात्मक अर्थमें 'कट' और अद्वयस्थान बोधक अर्थमें 'नुडि' 'यानुचि' है ।

याँक्क सम्बन्ध कारक चिन्ह है । 'का' जैसे वादकी संज्ञाके लिये वचनके कारण बदलता है वैसे यह नहीं बदलता । पर बहुधा यह लुप्त रहता है । 'रामुनि याँक्क' को केवल 'रामुनि' कहना पर्याप्त है ।

'में' के अर्थमें 'लो' या 'लोपल' का प्रयोग होता है और 'पर' के अर्थमें 'मीद' का ।

सम्प्रदान कारकमें कि या कु चिन्ह लगाया जाता है : रामुनिकि आ (रामको दे) सीतकु आ (सीताको दे) यही 'कि' या 'कु' सम्बन्ध कारकमें आता है : रामुनिकि रँण्डु सोदरीलु (रामके दो बहनें हैं) सीतकु रँण्डु सोदरीलु (सीताके दो बहनें हैं) आदि । जहाँ हिन्दीमें "का" या उसका परिवर्तित की या के लगाना पड़ता है वहीं तँलुगुमें "याँक्क" लगाना पड़ता है । बहुधा यह "याँक्क" लुप्त भी रह सकता है । रामुनि याँक्क सोदरि या रामुनि सोदरि ।



## पाठ ९ वाँ

[ तौम्मिदव पाठसु ]

|                         |             |
|-------------------------|-------------|
| नेनु वच्चित्तिनि ।      | में आया ।   |
| नीवु वच्चित्तिवि ।      | तू आया ।    |
| वाडु वच्चिनाडु ।        | वह आया ।    |
| वीडु वच्चिनाडु ।        | यह आया ।    |
| मेमु-मनमु वच्चित्तिमि । | हम आये ।    |
| मीरु वच्चित्तिरि ।      | तुम आये ।   |
| वारु वच्चिनारु ।        | वे आये ।    |
| वीरु वच्चिनारु ।        | ये आये ।    |
| तमरु वच्चित्तिरि ।      | आप आये ।    |
| नेनु वच्चित्तिनि ।      | मैं आयी ।   |
| नीवु वच्चित्तिवि ।      | तू आयी ।    |
| आमँ वच्चिनदि ।          | वह आयी ।    |
| ओमँ वच्चिनदि ।          | यह आयी ।    |
| मेमु-मनमु वच्चित्तिमि । | हम आयीं ।   |
| मीरु वच्चित्तिरि ।      | तुम आयीं ।  |
| वारु वच्चिनारु ।        | वे आयीं ।   |
| वीरु वच्चिनारु ।        | ये आयीं ।   |
| तमरु वच्चित्तिरि ।      | आप आयीं ।   |
| अदि वच्चिनदि (अमहत्)    | वह आया—आयी  |
| अिदि वच्चिनदि           | यह आया—आयी  |
| अवि वच्चिनवि            | वे आये—आयीं |
| अिवि वच्चिनवि           | ये आये—आयीं |

नेनु आँक मामिडि पंडु तिटिनि । मैंने अेक आम खाया ।  
 नेनु रँण्डु मामिडि पंड्लु तिटिनि । मैंने दो आम खाअे ।  
 नेनु आँक राँट्टें तिटिनि । मैंने अेक रोटी खाओी ।  
 नेनु मूडु राँट्टेंलु तिटिनि । मैंने तीन रोटियाँ खाओीं ।  
 मेमु—मनमु आँक  
 कागितमु तीसिकाँण्टिमि । हमने अेक कागज लिया ।  
 मेमु—मनमु अिरुबदि  
 कागितमुलु तीसिकाँण्टिमि । हमने बीस कागज लिअे ।  
 मेमु—मनमु आँक  
 पुस्तकमु तीसिकाँण्टिमि । हमने अेक पुस्तक ली ।  
 मेमु—मनमु पलु  
 पुस्तकमुलु तीसिकाँण्टिमि । हमने बहुत पुस्तकें लीं ।  
 तमरु पनि चेसितिरा ? क्या आपने काम किया ?  
 तमरु पनुलु चेसितिरा ? क्या आपने काम किअे ?  
 तमरु पॉरबाटु चेसितिरा ? क्या आपने गलती की ?  
 तमरु पॉरबाटुलु चेसितिरा ? क्या आपने गलतियाँ कीं ?  
 तमरु नेडु(ओी रोजु) अँन्नि  
 गंटलकु लेचितिरि ? आप आज कितने बजे अुठे ?  
 नेनु नेडु नालुगु गंटलकु लेचितिनि । मैं आज चार बजे अुठा ।  
 नेनु आँक व्यासमु ब्रासितिनि । मैंने अेक लेख लिखा ।  
 नेनु कूड आँक कथ ब्रासितिनि । मैंने भी अेक कहानी लिखी ।  
 तमरु अेमि चेसितिरि ? आपने क्या किया ?  
 मेमु—मनमु रँण्डु पाठमुलु  
 चदिवितिमि । हमने दो पाठ पढ़े ।  
 मीरु अँन्नि पाठमुलु चदिवितिनि ? तुमने कितने पाठ पढ़े ?  
 नेनु चाल आलोचिचितिनि । मैंने बहुत विचार किया ।



मेमुकूड़ बागुग आलोचिचितिमि । हमने भी खूब सोचा ।  
 वाडु चाल पौरवाटुलु चेसिनाडु ।<sup>१</sup> उसने बहुत गलतियाँ कीं ।  
 वारु विद्यार्थुलतो चर्चचेसिरि । अन्होंने विद्यार्थियोंसे चर्चाकी ।  
 नेनु अेमियु चेंप्प लेदु । मैंने कुछ नहीं कहा ।  
 बालिक आँक गिन्नं तेनीरु त्रागँनु । लड़कीने अेक कप चाय पी ।  
 बालुडु नालुगु गिन्नंलु पालु त्रागँनु । लड़केने चार कप दूध पिया ।  
 मेमु-मनमु आरु अरटि पंड्लु तिन्नामु । हमने छह केले खाअे ।  
 वाडु आँक गडियारमु काँनँनु ।<sup>२</sup> उसने अेक घड़ी खरीदी ।  
 आवु दूडनु तन्नँनु । गायने बछड़ेको लात मारी ।  
 मीरु नेटि समाचारमु विटिरा ? तुमने आजकी खबर सुनी ?  
 तमरु नेटि समाचारमुलु विन्नारा ? आपने आजकी खबरें सुनीं ?  
 तमरु पत्रिक चदुव लेदा ? क्या आपने अखबार नहीं पढ़ा ?  
 तुपाकि ध्वनिवल्ल पक्कि अँगिरँनु । बन्दूककी आवाजसे पंछी अुड़े ।  
 आमँ निन्न अिक्कड निदुर पो लेदु । वह कल यहाँ नहीं सोई ।  
 नेनु रेपु अक्कड निदुर पोअुदुनु । मैं कल वहाँ सोअूंगी ।  
 पिल्लि वच्चँनु अँलुक परुगँत्तँनु । बिल्ली आअी और चूहे भागे ।  
 अिदि अँवरु वच्चिरि ? ये कौन आअे ?  
 वारु बयट पोयारु । वे तो बाहर गअे ।  
 अीचित्रमुकादु आ चित्रमुनु चूडंडि । यह चित्र नहीं, वह चित्र देखो ।  
 नेनु तम पुस्तकमुनु अी मैंने आपकी पुस्तक  
 अलमारिलो पँट्रितिनि । अिस अलमारीमें रखी ।  
 तमरु आ अलमारिलो अेमि आपने अुस अलमारीमें क्या रखा ?  
 अुंचितिरि ?  
 मीरु अी बालुरुनु चूडंडि । तुम अिन लड़कोंको देखो ।

|                                           |                                   |
|-------------------------------------------|-----------------------------------|
| अँवरि पनि कालेदु ?                        | किसका काम नहीं हुआ ?              |
| तमरु अँवरि पेरु ब्रासिनारु ?              | आपने किनका नाम लिखा ?             |
| ओ पत्रमुनु निन्न प्रतीक्षिचु<br>चुटिमो; ३ | जिस पत्रकी कल राह देखी;           |
| आ पत्रमु नेडु दौरिक्कैनु ।                | वह पत्र आज मिला ।                 |
| ओ विद्यार्थुलतो निन्न<br>चर्च जरिगँनो;    | जिन विद्यार्थियोंसे कल चर्चा हुई; |
| वारु नेडु रा लेदु ।                       | वे आज नहीं आये ।                  |

टिप्पणियाँ: १. यदि यहाँ “अुसने” किसी स्त्रीका बोध करे तो “आमँ” चाल पाँरवाटुलु चेसिनदि” होगा ।

२. यदि यहाँ “अुसने” किसी स्त्रीका बोध करे तो “वाडु” के बदले “आमँ” होगा ।

३. अिस वाक्यांशका कर्ता हिन्दीमें अुत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष या अन्य पुरुष अेकवचन या बहुवचन हो सकता है । क्रियाका रूप अेक-सा रहेगा । पर तँलुगुमें क्रियाका रूप कर्ताके अनुसार बदलेगा—यहाँ ‘हम’ कर्ता माना गया है ।

ध्यान रहे कि जहाँ हिन्दीमें कर्ताके साथ ‘ने’ लगाया जाता है वहाँ तँलुगुमें कोअी चिन्ह नहीं लगाया जाता । क्रियाका रूप भी सदा कर्ताके लिंग वचनके अनुसार होता है ।



## पाठ १० वाँ

### [ पदियव पाठमु ]

नेनु—(कारक चिन्ह लगानेपर)      मैं—(कारक चिन्ह लगानेपर) “मुझ”  
 “ना” (केवल कर्म कारकमें) “न”

नेनु—(कर्तृ कारकमें कभी कोओ  
 चिन्ह नहीं लगता)      मैंने

ननु      मुझको, मुझे

नाचेत—नातो      मुझसे

नाकु—नाकाँरकु      मुझको

नावलन, नाकटँ, ना (दग्गर) नुँडि\*      मुझसे

ना      मेरा—मेरी,  
 नायाँक्क }

नाकु      मेरे

नायन्दु, नालो      मुझमें

ना पै, नामीद      मुझपर

नीवु—(कारक चिन्ह लगानेपर) “नी”      तू कारक चिन्ह लगानेपर “तुझ”  
 (केवल कर्म कारकमें) “नि”

नीवु—(कर्तृ कारकमें कभी कोओ  
 चिन्ह नहीं लगता)      तूने

निनु      तुझको, तुझे

नीचेत, नीतो      तुझसे

\* मुझसे अक रूपया लो—यहाँ ‘से’ का ठीक तँलुगु शब्द ‘नुँचि’ या ‘नुँडि’ है; पर प्रयोगमें अक्सर ‘दग्गर नुँडि’—पाससे—ही प्रयुक्त होता है । वैसे ही हमसे का ‘मा दग्गर नुँडि’ और तुमसेका ‘मी दग्गर नुँडि’ होता है ।

|                                 |                |
|---------------------------------|----------------|
| नीकु, नी काँरकु                 | तुझको          |
| नीवलन, नीकटें, नी (दग्गर) नुँडि | तुझसे          |
| नी, नीयाँक्क                    | तेरा, तेरी     |
| नीकु                            | तेरे           |
| नीयन्दु-नीलो                    | तुझमें         |
| नी पै, नी मीद                   | तुझपर          |
| मेमु-मनमु                       | हम             |
| मेमु-मनमु                       | हमने           |
| मम्मु-मम्मुलनु, मनलनु           | हमको, हमें     |
| माचेत-मातो-मनचेत, मनतो          | हमसे           |
| माकु-माकाँरकु; मनकु-मन काँरकु   | हमको           |
| मावलन: माकटें, मा नुँडि         | हमसे           |
| मनवलन, मनकटें, मननुँडि          |                |
| मा-मायाँक्क; मन,                | हमारा, हमारी   |
| मनयाँक्क,                       |                |
| माकु, मनकु                      | हमारे          |
| मायंदु-मालो; }                  | हममें          |
| मनयंदु-मनलो; }                  |                |
| मा पै-मामीद; }                  | हमपर           |
| मन पै-मन मीद; }                 |                |
| मीरु                            | तुम            |
| मीरु                            | तुमने          |
| मिम्मुलनु                       | तुमको, तुम्हें |
| मीचेत, मीतो                     | तुमसे          |
| मीकु-मी काँरकु                  | तुमको          |
| मी वलन, मीकटें, मीनुँडि         | तुमसे          |



|               |                    |
|---------------|--------------------|
| मी-मीयाँक्क   | तुम्हारा, तुम्हारी |
| मीकु          | तुम्हारे           |
| मीयंदु, मीलो  | तुममें             |
| मी पै, मी मीद | तुमपर              |

| पुल्लिंग                     | स्त्रीलिंग | अमहत्      |                              |
|------------------------------|------------|------------|------------------------------|
| अितडु, वीडु                  | ओमँ        | अदि        | यह                           |
| अितनि, वीनि                  | —          | दीनि       | अिस                          |
| अितडु, वीडु                  | ओमँ        | अदि        | अिसने                        |
| अितनिनि, वीनिनि              | ओमँनु      | दीनिनि     | अिसको, अिसे                  |
| अितनिचेत, वीनिचेत            | ओमँचेत     | दीनिचेत    | } अिससे                      |
| अितनि तो, वीनितो             | ओमँतो      | दीनितो     |                              |
| अितनिकि-वीनिकि               | ओमँकु      | दीनिकि     | } अिसको                      |
| अितनि काँरकु-वीनि<br>काँरकु  | ओमँ काँरकु | दीनिकाँरकु |                              |
| अितनिवलन                     | ओमँ वलन    | दीनि वलन   | } अिससे                      |
| अितनिकंटँ                    | ओमँ कंटँ   | दीनि कंटँ  |                              |
| अितनिनुंडि                   | ओमँनुंडि   | दीनि नुंडि |                              |
| अितनि याँक्क-<br>वीनि याँक्क | ओमँ याँक्क | दीनियाँक्क | } अिसका,<br>अिसकी,<br>अिसके, |
| अितनिकि-वीनिकि               | ओमँकु      | दीनिकि     |                              |
| अितनियंदु-वीनियंदु           | ओमँयंदु    | दीनियंदु   | } अिसमें,                    |
| अितनि लो-वीनिलो              | ओमँ लो     | दीनिलो     |                              |
| अितनी पै-वीनि पै             | ओमँ पै     | दीनिपै     | } अिस पर                     |
| अितनि मीद-वीनि<br>मीद        | ओमँ मीद    | दीनिमीद    |                              |

| पुल्लिग                 | स्त्रीलिग  | अमहत्      |              |
|-------------------------|------------|------------|--------------|
| १ अतडु-वाडु             | आमँ        | अदि        | वह           |
| अतनि-वानि               | —          | दानि       | अुस          |
| अतडु-वाडु               | आमँ        | अदि        | अुसने        |
| २ अतनिनि-वानिनि         | आमँनु      | दानिनि     | अुसको-अुसे   |
| ३ अतनिचेत-वानिचेत       | आमँचेत     | दानिचेत    | अुससे        |
| ४ अतनितो-वानितो         | आमँतो      | दानितो     |              |
| ५ अतनिकि-वानिकि         | आमँकु      | दानिकि     | अुसको        |
| अतनि काँरकु-वानि काँरकु | आमँ काँरकु | दानिकाँरकु |              |
| अतनिवलन                 | आमँवलन     | दानिवलन    | अुससे        |
| अतनि कंटँ               | आमँ कंटँ   | दानिकंटँ   |              |
| अतनि नुंडि              | आमँ नुंडि  | दानि नुंडि |              |
| अतनियाँक्क-वानि यॉक्क   | आमँ यॉक्क  | दानियाँक्क | अुसका, अुसकी |
| अतनिकि-वानिकि           | आमँकु      | दानिकि     | अुसके        |
| अतनियंदु-वानियंदु       | आमँयंदु    | दानियंदु   | अुसमें,      |
| अतनिलो-वानिलो           | आमँलो      | दानि लो    |              |
| अतनि पै-वानि पै         | आमँ पै     | दानि पै    | अुसपर        |
| अतनि मीद-वानि मीद       | आमँ मीद    | दानि मीद   |              |



| पुल्लिग      | स्त्रीलिग    | अमहत्      |                              |
|--------------|--------------|------------|------------------------------|
| वारु         | वारु         | अवि.       | वे                           |
| वारि         | वारि         | वानि       | अनु                          |
| वारु         | वारु         | अवि        | अनुहोंने                     |
| वारिनि       | वारिनि       | वानिनि.    | अनुको-अनुहें                 |
| वारिचेत      | वारिचेत      | वानिचेत    | अनुसे                        |
| वारितो       | वारितो       | वानितो     |                              |
| वारिकि       | वारिकि       | वानिकि     | अनुको                        |
| वारिकाँरकु   | वारिकाँरकु   | वानिकाँरकु |                              |
| वारि-        | वारि,        | वानि-      | अनुका-अनुकी                  |
| वारियाँक्क   | वारियाँक्क   | वानियाँक्क |                              |
| वारिकि       | वारिकि       | वानिकि     | अनुके                        |
| वारियंदु-    | वारियंदु-    | वानियंदु-  | अनुमें                       |
| वारिलो       | वारिलो       | वानिलो     |                              |
| वारिपै-      | वारिपै-      | वानिपै-    | अनुपर                        |
| वारिमीद      | वारिमीद      | वानिमीद    |                              |
| अँवडु        | अँवतँ        | अँदि       | कौन-जो<br>(अेकवचन)           |
| अँवनि        | अँवतँ        | देनि       | किस-जिस                      |
| अँवडु        | अँवतँ        | अँदि       | किसने-जिसने                  |
| अँवनिनि      | अँवतँनु      | देनिनि     | जिसको, जिसे<br>किसको, किसे ; |
| अँवनि चेत    | अँवतँ चेत    | देनिचेत    | किससे-जिससे                  |
| अँवनि तो     | अँवतँ तो     | देनितो     |                              |
| अँवनिकि      | अँवतँकु      | देनिकि     | किसको-जिसको                  |
| अँवनि काँरकु | अँवतँ काँरकु | देनिकाँरकु |                              |

## पुल्लिग

अँवनिवलन }  
 अँवनिकटँ }  
 अँवनि नुंडि }

अँवनि याँक्क

अँवनिकि

अँवनियंदु

अँवनिलो

अँवनिमीद

अँवनिपै

✓ अँवर

अँवरि

अँवर

अँवरिनि

अँवरिचेत }

अँवरितो }

अँवरिकि }

अँवरिकाँरकु }

अँवरिवलन }

अँवरिकटँ- }

अँवरिनुंडि }

अँवरि- }

अँवरियाँक्क }

अँवरिकि

## स्त्रीलिग

अँवतँ वलन }  
 अँवतँ कटँ }  
 अँवतँ नुंडि }

अँवतँ याँक्क

अँवतँकु

अँवतँयंदु

अँवतँ लो

अँवतँमीद

अँवतँ पै

अँवर

अँवरि

अँवर

अँवरिनि.

अँवरिचेत }

अँवरितो }

अँवरिकि }

अँवरिकाँरकु }

अँवरिवलन }

अँवरिकटँ- }

अँवरिनुंडि }

अँवरि- }

अँवरियाँक्क }

अँवरिकि

## अमहत्

देनिवलन }  
 देनिकटँ }  
 देनिनुंडि }

देनियाँक्क

देनिकि

देनियंदु,

देनिलो

देनिमीद

देनि पै,

अँवि

वेनि

अँवि

वेनिनि

वेनिचेत }

वेनितो }

वेनिकि }

वेनिकाँरकु }

वेनिवलन }

वेनिकटँ }

वेनिनुंडि }

वेनि- }

वेनियाँक्क }

वेनिकि

किससे-जिससे

किसका-की  
 जिसका-की

किसके-जिसके

किसमें,

जिसमें,

किसपर

जिसपर

कौन, जो

(बहुवचन)

किन, जिन

किन्होंने, जिन्होंने

किनको, किन्हें

जिनको, जिन्हें

किनसे,

जिनसे

किनको

जिनको

किनसे, जिनसे

किनका-किनकी

जिनका-जिनकी

किनके-जिनके



|            |   |            |   |          |   |        |
|------------|---|------------|---|----------|---|--------|
| अँवरि यंदु | } | अँवरि यंदु | } | वेनियंदु | } | किनमें |
| अँवरिलो    | } | अँवरिलो    | } | वेनिलो   | } | जिनमें |
| अँवरि मीद  | } | अँवरि मीद  | } | वेनिमीद  | } | किनपर  |
| अँवरिपै    | } | अँवरिपै    | } | वेनिपै   | } | जिनपर  |

वाडु (आमँ) गदि खाळी  
चेसिनाडु । (चेसिनदि) <sup>१</sup>

अुसने कमरा खाली किया ।

नेनु ओ रोजु बागुगा  
वस्त्रमुलु अुतुकितिति ।

मैंने आज खूब कपड़े धोये ।

मा (मन) तरगतिलो  
अिरुवैयैदु विद्यार्थुलुन्नारु ।

हमारे वर्गमें पच्चीस विद्यार्थी हैं ।

नाकु वानितो (आमँतो-दानितो)  
अे सम्बन्धमुनु लेदु । <sup>१</sup>

मेरा अुससे कोअी सम्बन्ध नहीं है ।

वाडु (आमँ-अदि) नातो  
अेमो अन्नाडु (अन्नदि) <sup>१</sup>

अुसने मुझसे कुछ कहा था ।

वारि पै वंद रूपायल अप्पु अुंडुनु ।  
ना (अे) पनि (अुडँतो)  
(अदि) अयिनदि । <sup>२</sup>

अुनपर सौ रुपअे कर्ज होगा ।

मेरा जो काम था वह हुआ ।

वाडु (आमँ-अदि) वारि पुस्तकमु  
तीसिकाँन्नाडु । (तीसिकाँन्नदि) <sup>१</sup>

अुसने अुनकी पुस्तक ली ।

तमरु अँवरँवरिनि पम्पुचुन्नारु । <sup>३</sup>

आप किस किसको भेज रहे हैं ?

वारु अुपन्यासमुलो  
चैप्पिनदि अेमनगा,

अुन्होंने भाषणमें कहा, कि

भारतीय भाषलु नेर्चुकाँनुट  
सुलभमु ।

भारतीय भाषाअें सीखना सरल है ।

मी सोदरुलु नन्नु संधिचिरि । <sup>४</sup>

आपके भाअी मुझसे मिले थे ।

वारिचेत सहायमु  
 कलुगुननु नम्मकमु माकु कद्दु।<sup>५</sup> अनुसे हमें मददकी आशा है ।  
 मिम्मु अक्कड़ अँवरु पिलिचिनदि ? तुम्हें यहाँ किसने बुलाया ?  
 आ बालिकनु नेनु गुतिंचुको लेनु । भुस लड़कीको मैं नहीं पहचानता ।  
 वाडु वानिनि (आमँनु-दानिनि) वह भुसे जानता है  
 अँवरिनि गुहंचि मीरु चँप्पिरो जिनके बारेमें आपने कहा  
 वीडु वारि बालुडु । उनका यह लड़का है

टिप्पणियाँ : १. अिन वाक्योंके “ भुस ” पँल्लिंग, स्त्रीलिंग या नपुंसक लिंगके हो सकते हैं । लिंगके अनुसार तँलुगुमें विभिन्न रूप होंगे ।

२. तँलुगुमें सम्बन्ध वाचक सर्वनामका प्रयोग बहुत कम चलता है । “ मेरा जो काम था वह हुआ ” का “ मेरा काम हुआ ” रूप ही प्रचलित है । ‘जो’ ‘था’ और ‘वह’ के तँलुगु शब्द कोष्ठकमें हैं ।

३. अिस वाक्यमें “ किसको ” का कर्म कारक अर्थ दिया है । यदि सम्प्रदान कारक हो तो तँलुगु वाक्यमें “ अँवरँवरिकि ” होगा ।

४. ‘मुझसे मिले’ ‘से’ में करण कारक चिन्ह है पर तँलुगुमें कर्म कारक चिन्ह लगता है ।

५. हिन्दीमें “ मदद ” संज्ञा है; तँलुगुमें मददकी आशा नहीं चलता । “ मदद मिलेगी अँसी आशा ” चलता है ।

तँलुगुमें ‘जो’ का प्रयोग कम चलता है । जहाँ चलता है तहाँ अंग्रेजीके समान प्रश्न वाचक और सम्बन्ध वाचक अेक ही समान हैं ।



## पाठ ११ वाँ

### [ पदकाण्डव पाठमु ]

|              |                   |
|--------------|-------------------|
| क्रिन्द      | के नीचे           |
| पै-मीद       | के अूपर           |
| बयट          | के बाहर           |
| वैनुक        | के पीछे           |
| तरुवात       | के बाद            |
| वैण्ट, कूड़  | के साथ            |
| प्रकारमु     | के अनुसार         |
| मुंदु        | के पहले-पूर्व     |
| गुंडा        | के द्वारा-जरिअे   |
| कारणभुवल्ल   | के कारण-मारे      |
| लोपल         | के अंदर-भीतर      |
| मुंदु        | के आगे-सामने      |
| दगगर         | के पास-निकट       |
| तप्प         | के अलावा-सिवाय    |
| काकुंड       | के बिना           |
| समीपमुन-दगगर | के नजदीक          |
| काँरकु       | के वास्ते-के लिअे |
| कारणमुवल्ल   | की वजह            |
| कंटै         | की अपेक्षा        |
| वल्लै        | की तरह-भाँति      |
| वैपुन        | की ओर-तरफ         |

अेलननगा, अँन्दुकनगा  
 काबट्टि-अंदुवलन  
 नीवु राकु ।  
 नीवु तिनकु ।  
 मीरु पाड़कंडि ।  
 मीरु तिसिकोकंडि ।  
 वाडु चँप्पनारंभिचँनु ।  
 वाडु-अदि  
 परुगिडनारंभिचँनु ।  
 ब्रासि अिच्चिरि<sup>१</sup>  
 ब्रासि अिच्चिवेसिनारु<sup>१</sup>  
 लेचि  
 तिनन-तिन्न  
 अिच्चिन  
 पोवुचुन्न  
 पोवुचुन्न बंडि  
 ब्रासिन जावु  
 आडुटकु पोयँनु ।  
 नेर्चुकाँनुटकु पोयँनु ।  
 नेर्चुको वलँनु ।  
 मरिचि पो वलँनु ।  
 अतडु वच्चुचुंडुनु ।  
 आमँ आडुचुंडुनु ।

क्योंकि  
 असलिअे-अतअेव  
 तू मत आ ।  
 तू न खा ।  
 तुम मत गाओ ।  
 तुम मत लो ।  
 वह कहने लगा ।  
 वह भागने लगा ।  
 लिखकर दिया ।  
 लिखकर दे दी ।  
 अुठकर-अुठकरके  
 खाया हुआ  
 दी हुआ  
 चलती हुआ-चलती  
 चलती गाड़ी  
 लिखी चिट्ठी  
 खेलने गया ।  
 सीखने गयी ।  
 सीखना चाहिअे ।  
 भूलना चाहिअे ।  
 वह आता होगा ।  
 वह खेलती होगी ।



|                                                  |                                                  |
|--------------------------------------------------|--------------------------------------------------|
| माटलाडु (विशेषण) माटलाडु<br>वाडु ( संज्ञा )      | बोलनेवाला                                        |
| पोवु बंडि                                        | जानेवाली गाड़ी ।                                 |
| वच्चुचुंडगा                                      | आते-आते                                          |
| तम दग्गर गडियारमु अंडेना ?                       | क्या आपके पास घड़ी थी ?                          |
| अवुनंडि, ना दग्गर गडियारमुलु<br>अंडिनवि ।        | जी हाँ, मेरे पास घड़ियाँ थीं ।                   |
| मेमु-मनमु आ चेट्टु किंद<br>कूर्चान्दुमु ।        | हम उस पेड़के नीचे बैठेंगे ।                      |
| वाडु अिटिकि बयट निलबडि<br>अंडुनु ।               | वह घरके बाहर खड़ा रहेगा ।                        |
| वारिलो जगडमु कलिगॅनु ।                           | अुनके बीच लड़ाओ हुआ ।                            |
| तम दग्गर अिदि तप्प अे अे<br>वस्तुवुलु अुन्नवि ?  | आपके पास अिसके अलावा और<br>क्या क्या चीजें हैं ? |
| नीवु बाँत्तिगा बिड्डलवल्लें<br>माटलाडुचुन्नावु । | तुम तो बिलकुल बच्चोंकी तरह<br>बातें करते हो ।    |
| साधु गुडि वैपु तिरिगिरि ।                        | साधु मंदिरकी तरफ मुड़े ।                         |
| बिड्ड तन तल्लि वैपु चूचुचुन्नदि ।                | बच्चा अपनी माँकी ओर देख<br>रहा है ।              |
| पाठशालकु वॅनुकटि वैपु ओटल<br>मैदानमु अुन्नदि ।   | पाठशालाके पीछेकी ओर खेलका<br>मैदान है ।          |
| नाकु मुंदु अिक्कड अॅवरु<br>वच्चियुंडिरि ?        | मेरे पहले यहाँ कौन आया था ?                      |

|                                               |                                 |
|-----------------------------------------------|---------------------------------|
| आ पुस्तकमुनु गुरिचि नेनु ना                   | अस पुस्तकके बारेमें मैंने अपनी  |
| अभिप्रायमु मुंदे तँलिप अन्तानु । <sup>२</sup> | राय असके पूर्व दी है ।          |
| पनि, पूर्ति अगुटकु मुंदु नेनु नीकु            | काम समाप्त होनेके पहले मैं      |
| कूलि अिब्व जालनु ।                            | तुम्हें मजदूरी नहीं दे सकता ।   |
| तेनीरु त्रागुटकंटं पालु त्रागुट               | चाय पीनेकी अपेक्षा दूध पीना     |
| मेलु ।                                        | अच्छा है ।                      |
| तमरु ब्रासिन प्रकारमु अिदुतो <sup>३</sup>     | आपके लिखे अनुसार साथमें         |
| पदहेनु कानुल बिळ्ळलु पंपु                     | पंद्रह पैसेकी टिकट भेज          |
| चुन्नानु ।                                    | रहा हूँ ।                       |
| मीरु ना वँनुकने अेल वच्चुचु                   | तुम मेरे पीछे पीछे क्यों आरहे   |
| अुन्नारु ?                                    | हो ?                            |
| तम ग्राममुनु गुरुंचियैन नगरमुनु               | अपने गाँव या शहरके बारेमें      |
| गुरुंचियैन परिचयमु                            | जानकारी                         |
| पदि पंकुतुललो ब्रायंडि ।                      | दस पंक्तियोंमें लिखिअे ।        |
| वारु ना तो माटलैन आडकुंडिरि ।                 | अुन्होंने मुझसे बाततक नहीं की । |
| नेडु नेनु कडुपुनिडुग भोजनमु                   | आज मैंने भरपेट भोजन किया ।      |
| चेसितिनि ।                                    |                                 |
| नीवेमियु माटलाडकु ।                           | तू कुछ मत बोल ।                 |
| नीवु अिटु अटु चूडकु ।                         | तू अधर अधर मत देख ।             |
| नीवु अक्कड कूचोकु ।                           | तू वहाँ मत बैठ ।                |
| मीरु कलमु काँनक्कंडि ।                        | तुम कलम न खरीदो ।               |
| मीरु अक्कड पोक्कंडि ।                         | तुम वहाँ न जाओ ।                |
| मीरु अेमियु चेयकंडि ।                         | तुम कुछ मत करो ।                |



|                                 |                                   |
|---------------------------------|-----------------------------------|
| मीरु नेडु स्नानमु चेयकंडि ।     | तुम आज मत नहाओ ।                  |
| मीरु कूड स्नानमु चेयकंडि ।      | तुम भी न नहाओ ।                   |
| तमरु अक्कड पोकांडि ।            | आप वहाँ न जाओ ।                   |
| तमरु तेनीरु त्रागकंडि ।         | आप चाय न पीजिए ।                  |
| नेनु अटिकि पोव कोरुचुन्नानु ।   | मैं घर जाना चाहता हूँ ।           |
| ननु अटिकि तप्पक पोवल्लेनु ।     | मुझे घर जाना ही चाहिये ।          |
| तमकु अेमि कावल्लेनु ?           | आपको क्या चाहिये ?                |
| वारिकि अेमियु वद्दु ।           | अुन्हें कुछ नहीं चाहिये ।         |
| अेमेमि चेंप्प वल्लेनो           | जो कुछ कहना है अभी कहो ।          |
| अिप्पुडे चेंप्पंडि ।            |                                   |
| आमँ अिटिकि पोयि पुस्तकमु        | वह घर जाकर किताब लायेगी ।         |
| तीसिकाँनि वच्चुनु ।             |                                   |
| बालुडु पडकुंड तप्पुकाँन्ना-     | वह कहने लगा कि लड़का              |
| डंनि वाडु चेंप्प नारंभिचेंनु ।* | गिरते गिरते बचा ।                 |
| पोवुचुंडगा नेनु वानिनि          | जाते जाते मैंने अुसे देखा ।       |
| (आमनु, दानिनि) चूचितिनि ।       |                                   |
| अतडु (आमँ-अदि) कागितमुनु        | अुसने कागज फाड़कर फेंक दिया ।     |
| चिंपि पार वेसँनु ।              |                                   |
| मेमु रँण्डु मूडु रोजुलु क्रिदट  | हम दो चार दिन पहले आपके           |
| मी अिटिकि वच्चितिमि ।           | घर आये थे ।                       |
| अयिते तमरु अँक्कडो बयट          | किन्तु आप कहीं बाहर गये हुअे थे । |
| पोयि अुंडिरि ।                  |                                   |
| वाडु नडचुचु अलसि पोयेंनु ।      | वह चलते-चलते थक गया ।             |
| मनिषि निदुर पोयि अुन्नाडु ।     | आदमी सोया हुआ है ।                |

वाडु अिटिकि पोपोताडु । वह घर जाने वाला है ।  
 बागुग पाडे वारु अँवरु ? अच्छा गाने वाला कौन है ?  
 आमँ नेडु राबोवु चुन्नदि । वह आज आने वाली है ।  
 पाँय्ये बंडिनि पट्टु कॉनकंडि । चलती गाड़ीको न पकड़ो ।  
 निदुर पोवु वारिनि मेलपकंडि । सोअ्रे हुअेको न जगाओ ।

टिप्पणियाँ : १. अिन दोनों वाक्योंमें कर्ता अन्य पुरुष बहुवचन माना गया है । याद रहे कि तँलुगु की क्रिया सदा कर्ताके अनुसार होती है ।

२. तँलुगुमें “राय दी” नहीं “राय प्रकट की” प्रयोग चलता है ।

३. तँलुगुमें केवल “साथमें” प्रयोग नहीं चलता । “अिसके साथ” जैसे सर्वनाम या संज्ञाकी आवश्यकता है ।

४. अिस तँलुगु वाक्यकी दो विशेषतायें हैं; ‘गिरते-गिरते वचा’ का ‘नहीं गिरा अैसा वचा’ रूप है । हिन्दीमें “वह कहने लगा” पहले ओर “लड़का गिरते-गिरते वचा” बादको है । तँलुगुमें अुलटा है ।



## पाठ १२ वाँ

[ पङ्कडव पाठम् ]

|                                     |   |          |
|-------------------------------------|---|----------|
| नेनु रावच्चुनु (संभाव्य)            | } | मैं आअं  |
| नेनु वच्चुदुनुगाक (प्रार्थना)       |   |          |
| नेनु रावच्चुना (अनुमति सूचक)        |   |          |
| नीवु रावच्चुन्नु (संभाव्य)          | } | तू आअे   |
| नीवु वच्चुदुनुगाक (प्रार्थना)       |   |          |
| नीवु रावच्चुना (अनुमति सूचक)        |   |          |
| वाडु (आमँ-अदि) रावच्चुनु            | } | वह आअे   |
| (संभाव्य) वाडु (आमँ-अदि)            |   |          |
| वच्चुनु गाक (प्रार्थना)             |   |          |
| वाडु (आमँ-अदि)                      |   |          |
| रावच्चुना (अनुमति सूचक)             | } | यह आअे । |
| अितडु (आमँ-अदि) रावच्चुनु           |   |          |
| (संभाव्य) अितडु (आमँ-अदि)           |   |          |
| वच्चुनु गाक (प्रार्थना)             |   |          |
| अितडु (आमँ-अदि)                     |   |          |
| रावच्चुना (अनुमति सूचक)             | } | हम आअें  |
| मेमु (मनम्) रावच्चुनु (संभाव्य)     |   |          |
| मेमु (मनम्) वत्तुमु गाक (प्रार्थना) |   |          |
| मेमु (मनम्) वत्तुमा ? (अनुमति)      | } | तुम आओ   |
| मीरु रावच्चुनु (संभाव्य)            |   |          |
| मीरु वत्तुरु गाक (प्रार्थना)        |   |          |
| मीरु रावच्चुना ? (अनुमति)           |   |          |

वारु (अवि) रावच्चुनु (संभाव्य) }  
 वारु वत्तुरु गाक (प्रार्थत पुं व स्त्री.) } वे आअें  
 अवि वच्चुनु गाक (प्रार्थना अमहत्)  
 वारु (अवि) रावच्चुना ? (अनुमति) }

वीरु (अवि) रावच्चुनु (संभाव्य) }  
 वीरु वत्तुरु गाक (प्रार्थना. पुं. व स्त्री) } ये आअें  
 अवि वच्चुनु गाक (प्रार्थना अमहत्)  
 वीरु (अवि) रावच्चुना ? (अनुमति) }

तमरु रावच्चुनु (संभाव्य). }  
 तमरु वत्तुरु गाक (प्रार्थना) } आप आअें  
 तमरु रावच्चुना (अनुमति) }

|                                             |                      |
|---------------------------------------------|----------------------|
| नेनु वच्चि अुन्नानु-अुंतिनि-अुंदुनु         | मैं आया हूँ-था-हूँगा |
| नीवु वच्चि अुन्नावु-अुंतिवि-अुंदुवु         | तू आया है-था-होगा    |
| वाडु वच्चि अुन्नाडु-अुंङ्गनु-अुंङुनु (पुं.) | वह आया है-था-होगा    |
| अदि वच्चि अुन्नदि-अुंङ्गनु-अुंङुनु (अमहत्)  |                      |
| वीडु वच्चि अुन्नाडु-अुंङ्गनु-अुंङुनु (पुं.) | यह आया है-था-होगा    |
| अिदि वच्चि अुन्नदि-अुंङ्गनु-अुंङुनु (अमहत्) |                      |
| मेमु-मनमु वच्चि अुन्नामु-अुंतिमि-अुंदुमु    | हम आअे हैं-थे-होंगे  |
| मीरु वच्चि अुन्नारु-अुंङिरि-अुंदुरु         | तुम आअे हो-थे-होगे   |
| वारु वच्चि अुन्नारु-अुंङिरि-अुंदुरु (पुं.)  | वे आअे हैं-थे-होंगे  |
| अवि वच्चि अुन्नवि-अुंङ्गनु-अुंङुनु (अमहत्)  |                      |
| वीरु वच्चि अुन्नारु-अुंङिरि-अुंदुरु (पुं.)  | ये आअे हैं-थे-होंगे  |
| अवि वच्चि अुन्नवि-अुंङ्गनु-अुंङुनु (अमहत्)  |                      |
| तमरु वच्चि अुन्नारु-अुंङिरि-अुंदुरु         | आप आअे हैं-थे-होंगे  |



नेनु वच्चि अन्नानु-अुटिनि-अुदुनु  
नीवु वच्चि अन्नावु-अुटिवि-अुदुवु  
आमँ वच्चि अन्नदि-अुडँनु-अुडुनु  
ओमँ वच्चि अन्नदि-अुडँनु-अुडुनु  
मेमु (मनमु) वच्चि अन्नामु-अुटिमि  
अुदुमु

मीरु वच्चि अन्नारु-अुडिरि-अुदुरु  
वारु वच्चि अन्नारु-अुडिरि-अुदुरु  
वीरु वच्चि अन्नारु-अुडिरि-अुदुरु  
तमरु वच्चि अन्नारु-अुडिरि-अुदुरु  
नेनु तमतो रावच्चुना ?

अुपन्यासमुंटे नेनु वत्तुनु ।  
अिप्पुडु मीरु कौन्त सेपु निदुर  
पोदुरुगाक ।

कूड सिरा बुडि कलमु तप्पक  
तीसिकौनि वत्तुरगाक ।

तमरु प्रयत्नमुचेसिन अँडल  
सफलत गिट्टुनु ।

मीरु अक्कड पोते  
वारिनि तप्पक चूडंडि ।

मेमु-मनमु-वारिकि सहायमु  
चेयुदुमुगाक ।

तमकु तेनीरु तँप्पिचना ?

मीरु अिदाक अँन्निपाठमुलु चदि-  
वियुन्नारु ?

मँ आओ हँ-थी-हँगी  
तू आओ है-थी-होगी  
वह आओ है-थी-होगी  
यह आओ है-थी-होगी  
हम आओ हैं-थीं-होगी

तुम आओ हो-थीं-होगी  
वे आओ हैं-थीं-होगी  
ये आओ हैं-थीं-होगी  
आप आओ हैं-थीं-होगी  
मँ आपके साथ आऊँ ?  
व्याख्यान हो तो मँ चलूंगा ।  
अब आप थोड़ी देर सोअें ।

साथमँ दवात, कलम अवश्य  
लाअें ।

यदि आप कोशिश करें तो  
सफलता मिलेगी ।

अगर तुम वहाँ जाओ तो  
अनुसे जरूर मिलो ।

हम अनुकी मदद करें ।

क्या आपके लिअे चाय  
मँगाअूँ ?

तुमने अबतक कितने पाठ  
पढ़े हैं ?

नेनु सुमार पदकाण्डु पाठमुलु  
चदिवियुन्नानु ।

नेनु—प्रश्नलु अन्नियु वेसि अन्नानु । मैंने सब—प्रश्न लगाये हैं ।

वारु पलु चलचित्रमुलु चूचि ।  
अन्नारु ।

अन्होंने कही चलचित्र देखे हैं ।

नेनु तम कवित चदिवि अन्नानु ।

मैंने आपकी कविता पढ़ी है ।

गुरुवुगारु तमरिनि पिलिचि  
अन्नारु ।

गुरुजीने आपको बुलाया है ।

मा अर्जीनि नीवु वारिकि अिच्चि  
अन्नावा ?

हमारी अर्जी तूने अुनको दी है ?

तमरिनि गुरिचि नेनुचाल विनि  
अन्नानु ।

आपके बारेमें मैंने बहुत सुना है ।

तमकु व्याकरणमु अँवरु नेपि  
अन्नारु ?

आपको व्याकरण किसने  
सिखाया है ?

मेमु तम अपन्यासमुनु विटिमि ।

हमने आपका भाषण सुना था ।

मीरु पुस्तकमुलु काँन्नारा ?

तुमने किताबें खरीदी थीं ?

वारु अेमि तीसिकाँनि अँडिरि ?

अन्होंने क्या लिया था ?

वाडु (आमँ) चीर काँनि अँडँनु ।

अुसने साड़ी ली थी ।

नेनु अन्नि प्रश्नलकु जवावु  
ब्रासियुंटिनि ।

मैंने सभी प्रश्नोंके अुत्तर  
लिखे थे ।

नेनु तमतो चँप्पियुंडलेदा ?

मैंने आपसे कहा था न ?

वारु सरिगा चँप्पिरि ।

अन्होंने ठीक कहा था ।

तमरु वारि अिटिकि अेल पोयिरि ?

आप अुनके घर क्यों गये थे ?

वाडु अप्पुडु निदुर पोयि अँडँनु ।

वह तो अुस समय सोया था ।



नेनु अिदेकथ नीकु अितकु पूर्वमु मैंने यही कहानी तुम्हें अिसके पूर्व  
 चैंप्पियुंतिनि (विनिपिंचि अुंतिनि) । बताओ थी (कह सुनाओ थी) ।  
 ना अिटिकि अतिथुलु वच्चि अुंडिरि । मेरे घर मेहमान आओ थे ।  
 क्रिदटि वर्षमु वान बागुग पिछले वर्ष खूब वर्षा हुआ थी—  
 कुरिसि अुंडेनु । (पानी बरसा था) ।  
 दर्जी अंगी कुट्टि अुंडुनु । दर्जीने कमीज सी होगी ।  
 चाकलि वस्त्रमुलु अुतिकि अुंडुनु । धोबीने कपड़े धोओ होंगे ।  
 वाडु (आमँ-आदि) पनि चेसि अुंडुनु । अुसने काम किया होगा ।  
 वारु ज्ञप्ति परचुकाँनि अुंदुरु । अुन्होंने याद (स्मरण) किया होगा ।  
 मीरु वारिनि चूचि अुंदुरु । तुमने अुन्हें देखा होगा ।  
 वारु अिप्पटिकि अंदि अुंदुरु । वे अबतक पहुँची होंगी ।  
 नेनु ओ कथ विनि अुंदुनु । मैंने यह कहानी सुनी होगी ।  
 अथवा अँककडैन चदिवि अुंदुनु । या कहीं पढ़ी होगी ।  
 तमरु हिन्दि परीक्खलु अिच्चि आपने हिन्दीकी परीक्षाओं  
 अुंदुरु । दी होंगी ।  
 मीरु मराठि परीक्ख अिच्चि तुमने मराठीकी परीक्षा दी  
 अुंदुरु । होगी ।

### संख्याओं ।

|        |      |
|--------|------|
| आँकटि  | अेक  |
| रँण्डु | दो   |
| मूडु   | तीन  |
| नालुगु | चार  |
| अैदु   | पाँच |
| आरु    | छह   |

|               |         |
|---------------|---------|
| अेडु          | सात     |
| अँनिमिदि      | आठ      |
| ताँम्मिदि     | नौ      |
| पदि           | दस      |
| पदकाँण्ड      | ग्यारह  |
| पंङ्गुण्डु    | बारह    |
| पदुमूडु       | तेरह    |
| पदुनालुगु     | चौदह    |
| पदुनैदु       | पंद्रह  |
| पदुनारु       | सोलह    |
| पदुहेड़       | सत्रह   |
| पद्दँनिमिदि   | अठारह   |
| पंताँम्मिदि   | अुन्नीस |
| अिरवै         | बीस     |
| मुप्पै        | तीस     |
| नलभै          | चालीस   |
| याभै          | पचास    |
| अरवै          | साठ     |
| डँवभै         | सत्तर   |
| अँनभै         | अस्सी   |
| ताँम्भै       | नब्बे   |
| वंद (या) नूरु | सौ      |

बीसके बाद 'अिरवै' आदिके साथ अेक, दो, तीन आदिका तँलुगु शब्द जोड़नेपर पूरी संख्या आ जायेगी जैसे : अिरवैअँकटि (अिक्कीस) अिरवै ताँम्मिदि (अुनतीस) मुप्पैमूडु (तँतीस) अँनभैताँम्मिदि (नौवासी) ताँम्भैताँम्मिदि (निन्नाब्बे) आदि ।



अिरवैअैद (पचीस) 'पातिक' भी कहलाता है। अेक सौ अेक 'नूट आँकटि' कहलाता है। वंद आँकटिका भी प्रयोग चलता है। 'नूट' के बाद कोअी संख्या जोड़नेसे सौ और अुस संख्याका बोध होगा। नूट पदि-अेक सौ दस।

सौके पूर्व रँण्डु, मुडु आदि संख्याअें जोड़नेसे 'अुतने सौ' का बोध होगा।

|        |       |
|--------|-------|
| वँय्यि | हजार  |
| लक्ष   | लाख   |
| कोटि   | करोड़ |

'हजार' के बाद 'वँय्यिन्नि' और कोअी संख्या लगानेसे हजार और अुस संख्याका बोध होगा : वँय्यिन्नि आरु-अेक हजार छह; वँय्यिन्नि अँनिमिदि वंदल नलभैनालुगु-अेक हजार आठ सौ चवालीस आदि। 'वँय्यिन्नि' के पूर्व 'अेक' लगानेकी जरूरत नहीं है। "वँय्यिन्नि ताँम्मिदि वंदल (नूट) ताँम्भैताँम्मिदि" (अेक हजार नौसौ निन्नान्वे) के बाद 'वँय्यि' का बहुवचन रूप 'वेलु' हो जाता है। 'वेलु' के पूर्व कोअी संख्या लगानेसे अुतने हजारका बोध होगा; मूडु वेलु-तीन हजार; ताँम्भै वेलु-नव्वे हजार आदि। दो हजारके बाद "वेल" के साथ कोअी संख्या जोड़नेपर अुतने हजार और अुतनी संख्याका बोध होगा। रँण्डु वेल नूट मुप्पयारु-दो हजार अेक सौ छत्तीस।

पावु पाव

हर संख्याके साथ अनुस्वार(मकार) लगाकर 'पावु' लगानेसे हिन्दीमें 'सवा' लगानेका अर्थ होगा--

|                 |               |
|-----------------|---------------|
| आँकटि पावु      | सवा-सवा अेक   |
| रँण्डुपावु      | सवा दो        |
| पदिपावु         | सवा दस        |
| पदँनिमिदिपावु   | सवा अठारह     |
| अरवै नालुगुपावु | सवा चौसठ आदि। |
| अर्ध            | आधा           |

हर संख्याके साथ “न्नर” जोड़नेसे “साढ़े” लगानेका अर्थ होगा ।

|               |                    |
|---------------|--------------------|
| ऑकटिन्नर      | डेढ़               |
| रेंडुन्नर     | ढाभी               |
| अैदुन्नर      | साढ़े पाँच         |
| पदकाँण्डुन्नर | साढ़े ग्यारह आदि । |
| मुप्पावु      | पौन ]              |

हर संख्याके साथ अनुस्वार (मकार) लगाकर मुप्पावु लगानेसे “वह संख्या और तीन पाव ” का अर्थ होगा ।

|                 |                 |
|-----------------|-----------------|
| ऑकटिम्मुप्पावु  | पौने दो         |
| रेंडुम्मुप्पावु | पौने तीन        |
| अैदुम्मुप्पावु  | पौने छह ।       |
| पंड़ुम्मुप्पावु | पौने तेरह आदि । |

### दिन

आदिवारमु—रविवार; सोमवारमु—सोमवार; मंगलवारमु—मंगलवार; बुधवारमु—बुधवार; बृहस्पतिवारमु—गुरुवार; शुक्रवारमु—शुक्रवार; शनिवारमु—शनिवार ।

### मास

चैत्रमु; वैशाखमु; ज्येष्ठ; आषाढ़; श्रावण; भाद्रपद; आश्वयुज; कार्तिक; मार्गशीर्ष; पुष्य; माघ; फाल्गुन ।

महीनेका आरम्भ अमावस्याके बाद प्रतिपदाको होता है ।



## १. परिचयम्

नमस्कारम्। वारु अँवरु ? वीरु ना  
मित्रुलु। नमस्कारम्।

वीरु अँवरु ? वीरु ना  
गुरुवुगारु। नमस्कारम्।

तम पेरु अेमंडि?

ना पेरु...।

तम अिटि पेरु अेमंडि ?

मी तंड्रिगारि पेरु अेमि ?

तमरु अँक्कड़ वसिंचु चुन्नारु ?

मेमु (मनमु) वर्धलो वसिंचु  
चुन्नामु।

मी अिल्लु नगरपु अे भागमुलो  
अुन्नदि ?

अिक्कड़ नुंचि ना वस चाल  
दूरम्।

तम पूर्ण चिरु नाम चेंप्पंडि।

व्रासिकॉण्डि।

✓ तमरु अँक्कड़ नुंडि  
वच्चु चुन्नारु ?

नेनु तिन्नग बम्बवी नुंडि  
वच्चु चुन्नानु।

तमरु अँक्कड़ पोवुदुरु ?

भा. भा. तेलुगु—४

## १. परिचय

नमस्ते ! वे कौन हैं ? ये मेरे  
मित्र हैं। नमस्कार।

ये कौन हैं ? ये मेरे गुरुजी  
हैं। प्रणाम।

आपका शुभ नाम क्या है ?

मेरा नाम .... है।

आपका उपनाम क्या है ?

आपके पिताजीका नाम क्या है ?

आप कहाँ रहते हैं ?

हम वर्धा रहते हैं।

आपका घर शहरके किस  
भागमें हैं ?

यहाँसे मेरा निवासस्थान बहुत  
दूर है।

आप अपना पूरा पता बताअिए।  
लिख लीजिए।

आप कहाँसे आ रहे हैं ?

मैं सीधे बम्बवीसे आ रहा हूँ।

आप कहाँ जाअेंगे ?

नेनु अिप्पुडु नागपुरिकि  
पोवुदुनु ।

तम बंधुवुलु अँवरें अक्कड़  
अुन्नारा ?

ना बंधुवुलु-चुट्टालु अक्कड़ चाल  
अुन्नार ।

अक्कड़ नाकु काँन्दरु मित्रुलुनु  
अुन्नार ।

तमरु अक्कड़ अेमि पनि  
चेयुचुन्नार ?

नेनु कार्यालयमुलो गुमास्तानु ।

मरियु चदुवुचुन्नानु ।

तमरु अे पाठशाललो चदिवँदरु ?

तमरु अे तरगतिलो चदुवुचुन्नार ?

नीवु राष्ट्रभाष परीक्षलो

अुत्तीर्णुडवा ?

अवुनंडि । अे परीक्ष ?

अे केंद्रमु नुंडि ?

अक्कड़ राष्ट्रभाष तरगतुलु

जरुगुचुन्नवा ?

अवुनंडि तरगतुलु सरिगा

जरुगुचुन्नवि ।

अँवरँवरु नेपिस्तारु ?

पलु अुपाध्यायुलु नेपुचुन्नार ।

अयिते नेनु अिटिलोने तयारु

चेसिकाँण्टिनि ।

में अब नागपुर (को) जाअूंगा ।

क्या आपके कोअी रिश्तेदार  
वहाँ हैं ?

मेरे नाते रिश्तेके लोग वहाँ  
बहुत हैं ।

वहाँ मेरे कुछ मित्र भी हैं ।

आप वहाँ क्या काम करते हैं ?

मैं दफ्तरमें लेखक हूँ ।

और पढ़ता भी हूँ ।

आप किस पाठशालामें पढ़ते हैं ?

आप किस वर्गमें पढ़ते हैं ?

क्या तुम राष्ट्रभाषाकी परीक्षामें

अुत्तीर्ण हो ?

जी हाँ । कौनसी परीक्षा ?

किस केंद्रसे ?

वहाँ राष्ट्रभाषाके वर्ग चलते हैं ?

जी हाँ, वर्ग बराबर चलते हैं ।

कौन-कौन पढ़ाते हैं ?

कअी अध्यापक पढ़ाते हैं ।

किन्तु मैंने अपनी तैयारी घरपर

ही की ।



## २. सत्कारमु

## २. खातिरदारी

मीकु अमि सत्कारमु चेतुनु ?      आपकी क्या खातिर करूँ ?  
मीकु तेनीरु प्रियमे कदा ?      आप चाय पसंद करते हैं न?  
तमरु तेनीरु त्रागुतारा ? लेदंडि ।\*      आप चाय पिअेंगे ? जी नहीं ।  
वेडि पालु तीसिकॉण्डि । सरे, गरम दूध लीजिअे ।      अच्छा,  
                         तीसिकोरंडि ।      लाजिअे ।  
माँदट अेदैन तिंटारा ? अिदिगो      पहले कुछ खाअेंगे ? लीजिअे,  
                         नीरैन त्रागंडि ।      पानी तो पीजिअे ।  
कूर्चॉण्डि, अिटु ओला      बैठिअे । अधर अैसे बैठिअे ।  
                         कूर्चॉण्डि ।      + तुम यहाँ बैठो ।  
नीवु अिटु कूर्चो ।      आरामसे बैठो । ठीक है ।  
नॅम्मदिगा कूर्चो । सरे ।      आप कुर्सीपर बैठिअे ।  
तमरु कुर्ची पे कूर्चॉण्डि ।      भोजन कर चुके ?  
भोजनमु चेसि अयिनदा ?      आज तुम मेरे घर भोजन करो ।  
नेडु नीवु ना अिटिलो भोजनमु      अभी नहीं ।  
                         चैयुमु । अिप्पुडुकादु ।      फिर कब आअेंगे ? कल सुबह ।  
मरि अॅप्पुडु वच्चंदरु ? रेपु अुदयम् ।      आज शामको नहीं आ सकेंगे ?  
नेडु सायंत्रमु रा जालरा ?

\* यदि जी नहीं से मतलब “मैं नहीं पीता” है तो लेदंडि; यदि “मुझे नहीं चाहिअे” हो तो “वदंडि” होगा ।

+ बताया जा चुका है कि वस्तुतः तॅलुगुमें तू और तुमका प्रयोग अेक सा होता है । पिछले पाठोंमें अन्तर समझानेके लिअे ‘तुम’ का अर्थ मीरु बताया गया । पर सचमुच मीरु और तमरुमें अन्तर कम है । आगे तुम और तू का अेक सा अर्थ बताया जाअेगा ।

प्रयत्नं चेसँदनु (प्रयत्निचँदनु) सरे। कोशिश करूँगा। अच्छी बात है।  
रेपु अुदयम् रंडि। तप्पक रंडि। कल सुबह आअिअे। अवश्य  
आअिअे।

नेनु तमरिनि प्रतीक्षिचुदुनु। मैं आपका अितजार करूँगा।  
अिप्पुडु अँन्त समयमु आयँनु? अभी क्या समय हुआ?  
मी गडियारमुलो अँन्नि गंटलु? आपकी घड़ीमें कितने बजे हैं?  
ना गाडियारमुलो सरिगा मेरी घड़ीमें ठीक नौ बजे हैं।  
ताँम्मिदि गंटलु। मी गडियारमु आपकी घड़ी कुछ पीछे है क्या?  
काँञ्चँमु वँनु बडि अुन्नदा? मी अैसा लगता है कि आपकी\*  
गडियारमुकाँञ्चँमु मुंदुगा घड़ी कुछ आगे है।

पोवुनटलु कनिपिचुचुन्नदि।

अिप्पुडु पदिम्मुप्पावु अयि अुंडुनु। 'अभी पौने ग्यारह बजे होंगे।

अिक्कडि गडियारमुलो पदि यहाँकी घड़ीमें दस बजकर  
गंटलयि (काँट्टि) याभैयैदु पचपन मिनट हुअे।  
निमिषमुलायँ।

सरे, पदकाँण्डु (काँट्टुटकु) गंटलकु ठीक है—ग्यारह बजनेमें पाँच  
अैदु निमिषमुलुन्नवि। मिनट कम हैं।

अिक्कड नुंडि पदकाँण्डुन्नर यहाँसे साढ़े ग्यारह बजे  
गंटलकु पोदमु। चलेंगे।

अिन्दुलो मीकु अेमियु अभ्यन्तरमु अिसमें आपको कोअी आपत्ति  
लेदु गदा? तो नहीं है न?

पदकाँण्डुम्मुपावुकु पोते? सवा ग्यारह बजे चलें तो?

\* जहाँ जहाँ वाक्यमें "कि" रहता है वहाँ तँलुगु वाक्यमें "कि" के  
वादका अंश पहले और पहलेका अंश वादमें आता है।



मीरु मरि अँकडैन पोवलँना ? क्या आपको कहीं और जगह जाना है ?  
 अेमि पनि ? अवसर मैंनिदि । क्या काम है ? जरूरी है ।  
 सरे, अयितो पदकाँण्डु अथि अिरवै अच्छा तो ग्यारह बीसको यहाँसे निमिषमुलकु अिक्कडनुंडि पोवुदमु । चलेंगे ।  
 सरियैन वेळकु पोयि अंदुदुमु । ठीक समयपर पहुँच जाअेंगे ।  
 आलस्यमु अयिते कूड अैदु आरु देर हुअी भी तो पाँच सात निमिषमुल आलस्य मगुनु । मिनटकी देर होगी ।\*  
 वानिनि (आमँनु)संदशिचडमु अुससे भेंट वहीं हो जाअेगी ।  
 अक्कड़े अयि पोतुंदि ।  
 सँलवु दिनमुलौ अँप्पुडैन रंडि । कभी छुट्टीके दिन आअिअे ।  
 सरे नमस्कारम् अच्छा नमस्ते ।

\* (तेलुगुमें पाँच सातके स्थानपर पाँच छः का प्रयोग होता है ।)

### ३. रोगितो सम्भाषण

अेमोय ! नी आँळु\* अेलागु  
 अुन्नदि ।  
 ना आँळु बाग लेदंडि ।  
 तम आँळु ? ना आँळु बागुग  
 अुन्नदि ।  
 मीकु अेमि चैयुचुन्नदि ।

### ३. बीमारसे बातचीत

क्यों भाअी ! तुम्हारी तबियत  
 कैसी है ?  
 मेरी तबियत ठीक नहीं है ।  
 आपकी तबियत ? मेरी तबियत  
 ठीक है ।  
 आपको क्या हो रहा है ?

\* "आँळु" शब्दका अर्थ "शरीर" है । पर अैसे प्रसंगोंमें अुसका "तबियत" के अर्थमें प्रयोग होता है ।

तल नाँप्पि वेयुचुन्नदि ।  
काँच्चैमु ज्वरमु कूड अन्नदि ।

माँन्ननुचि जलुबु चेसिदि ।

कडुपुलो तेलिकगा नाँप्पि  
वेयुचुन्नदि ।

माँन्न अटुमाँन्न तिडि अरग  
लेदु ।

निन्न रात्रि पलुमारु विरेचन  
मयिनदि ।

नेडु तल चुट्टु चुन्नदि ।

आँकटि रँण्डु सारुलु वांति कूड  
आयँनु ।

दग्गु वच्चुचुन्नदा ? लेदंडि,  
दग्गु लेदु ।

रात्रि नीकु निदुर बाग वच्चिनदा ? रातमें तुम्हें अच्छी नींद आती ?

अवुनु, काँच्चैमु निदुर  
वच्चिनदि ।

मंदु पुच्चुकाँण्टुन्नावा ?

अवुनंडि, नेडु मंदु तँप्पिचितिनि ।

अे डाक्टरु-मंदु तीसिकाँनुचुन्नावु ?

नालिक चूप्पिचु ।

नन्नु नी नाडि चूड निम्मु ।

ज्वरम् अँक्कुवे ।

अँन्नि दिनमुलुग ज्वरम् ?

मूडु दिनमुलुगना ? कंड्लु मंडु  
चुन्नवि ।

सर दर्द हो रहा है ।

थोड़ा बुखार भी है ।

परसोंसे सर्दी (जुकाम) हो  
गयी है ।

पेटमें हलकासा दर्द हो रहा है ।

नरसों तरसों खाना हजम नहीं  
हुआ ।

कल रातको कभी बार दस्त हुअे ।

आज सिरमें चक्कर आ रहे हैं ।

अेक दो बार अुल्टी तक हुअी थी ।

खाँसी आती है ? जी नहीं, खाँसी  
तो नहीं है ।

हाँ, थोड़ी नींद आती ।

दवा ले रहे हो ?

जी हाँ ! दवा आज मँगायी है ।

किस डाक्टरकी दवा लेते हो ?

जीभ दिखाओ ।

मुझे तुम्हारी नब्ज देखने दो ।

बुखार तेज है ।

कितने दिनोंसे बुखार है ?

तीन दिनसे ? आँखें जल रही हैं ।



अदियु तिनुटकु त्रागुटकु अभि- कुछ खानेपीनेकी अिच्छा नहीं  
 लाष लेदु । होती है ।  
 बत्ताय पंडु रसमु त्रागु । मोसम्बीका रस पिओ ।  
 पंड्लु तिन गलवु । फल खा सकते हो ।  
 मिरपकाय मसाल वेंपुडु पदार्थालु मिर्च मसाले और तले पदार्थ न  
 तिनकु । खाओ ।  
 काँञ्चेंमु सग्गु विय्यमुकंजि, थोड़ी साबूदानेकी खीर, मीठा  
 तिय्यनि मज्जिग, खिचड़ी मट्ठा, खिचड़ी खा सकते हो ।  
 पुच्चुको वच्चुनु ।  
 तेनीरु काफी त्राग वच्चुनु । चाय काफी पी सकते हो ।  
 भोजनमु चेयकुमु । भोजन मत करो ।  
 ज्वरमुलो अेमियु तिन वोकु । बुखारमें कुछ न खाओ ।  
 ओ मंदु पुच्चुको । यह दवा लो ।

#### ४. कुटुम्बमु लोनिवारु

#### ४. परिवारके लोग

मा कुटुम्बमु चाल पेंददि। मा तं- हमारा परिवार बहुत बड़ा है ।  
 ड्रिकि पूल तोट आँकटि कद्दु । मेरे पिताजीका फूलोंका अेक  
 माली आ तोटनु संरक्षिचु बाग है । माली अुस बागकी  
 चुन्नाडु । ना तल्लि पातिलो देखभाल करता है । मेरी माताजी  
 चेंट्ल चेमलकु नीरु पारुदल चेयु- क्यारियोंमें पेड़ पौधोंमें पानी  
 चुन्नदि । ना सोदरुलुनु सोदरी- देती हैं । मेरे भाओ और बहनें  
 लुनु पुव्वुलु अेरुकाँनु चुन्नारु । फूल चुनती हैं ।

पुव्वु विकसिंचिते सुवासनबाग फूल खिलते हैं तो खुशबू खूब  
व्यापिंचुचुन्नदि । फैलती है ।

नालुगु वैपुलनु सुगंधमयमुग चारों ओर सुगन्ध ही सुगन्ध  
व्यापिंचु चुन्नदि । छा जाती है ।

काँन्नि समयमुलो ना पिनतंङ्गि कभी मेरे चाचा<sup>१</sup> फूलोंका गुच्छा  
(या पेंदतंङ्गि) पूल बंति अथवा या फूलोंकी माला बनाते हैं ।  
दंड चेसैंदरु ।

ना पिनतल्लि (या पेंदतल्लि) मेरी चाची अुसमें फूल, पौधोंके  
अंदुलो पुव्वुलुनु चेंटल आकुलुन्नु पत्ते और कलियाँ भी गूंथती  
माँगलुन्नु ताँडुगुचुन्नदि । है ।

नीरु दॉरकनप्पुडु पुव्वुलु पानी न मिलने पर फूल कुम्हला  
अँण्डिपोवुनु । जाते हैं ।

ना कुमारुलुन्नु कूतुरुलुन्नु चाल मेरे बेटे और बेटियाँ बहुत ही  
अल्लरि चेसैंदरु । दुष्टुलु । अधमी हैं । नटखट हैं ।

बागा अल्लरि चेसैंदरु । खूब अधम मचाते हैं ।  
चप्पुडु चेसैंदरु । शोर करते हैं ।

ना आँक कुमारुडु पूलनु मेरा अेक लड़का फूलोंको  
तँच्चि दळमुलुगा चेसैंदडु । तोड़कर पंखुड़ियाँ बना देता है ।

मरियु ताँक्कि वेसैंदडु । और कुचल डालता है ।

ना वदिनँ वानिनि बेंदरिंचु मेरी भाभी अुसे डाँटती है ।  
चुन्नदि ।

१. (चाचाका अर्थ पिताका बड़ा भाभी या छोटा भाभी है । तँलुगुमें  
पिताका बड़ा भाभी पेंद तंङ्गी और छोटा भाभी पिन तंङ्गि है ।)



अयिते वाडु लक्ष्म्यं पेंडुडु ।      लेकिन वह मानता ही नहीं ।  
 ना आँक पेंद कुमारु-      मेरे अंक बड़े लड़केका  
 निकि पेंण्डुलि अयि पोयिनदि ।      विवाह हो गया है ।  
 मा कोडलि तल्लि अिटिकि      हमारी बहू मायके गयी है ।  
 (पुट्टिटिकि) पोयि अन्नदि ।  
 (पुट्टिटिकि-जन्मके घरको ।)  
 आमँ माम-अत्तलनु चाल      वह ससुर-सासका बड़ा  
          गौरविंचु चुन्नदि ।      आदर करती है ।  
 नाकु आँक अक्क अन्नदि । आमँ मेरे अंक दीदी है । आजकल वह  
 अिप्पुडु तन अत्तगारिटिलो      अपनी ससुरालमें है ।  
 अन्नदि । ना अन्न याँक्क बाव-      मेरे भाईका साला कल आया है ।  
          मरदि निन्न वच्चिनाडु ।  
 वाडु ना सोदरुनि कुमार      वह मेरे भतीजों और भतीजियोंको  
 लकुन्नु मेन अल्लुलकुनु मंचि      अच्छी अच्छी कहानियाँ सुनाता  
 कथलु चेंप्पुचुन्नाडु\*      है ।  
 ना तातलु अव्वलु अिकयु      मेरी दादा-दादी, + नाना-नानी  
 जीविचि अुन्नारु ।      अभी जीवित हैं ।

\* “भतीजा” का कोई ठीक शब्द तेलुगु या तमिलमें नहीं है ।  
 आम तौरपर ‘पुत्र’ का प्रयोग होता है । यदि किसी स्त्रीका भतीजा हो तो वह  
 (तेलुगुमें) ‘मेन अल्लुडु’ कहलाता है । वैसे ही किसी पुरुषका भांजा भी  
 कहलाता है ।

+ तेलुगुमें दादा और नाना दोनोंके लिये ‘तात’ और दादी और  
 नानी दोनोंके लिये ‘अव्व’ चलता है । तातलु-अव्वलु अिस बहुवचन प्रयोगसे  
 दोनों वर्गके “ताता” ओं और “अव्व” ओंका बोध होता है । ‘तात’ का आदर  
 सूचक रूप ‘तातगारु’ है ।

ना मेन अत्त वारि पति,  
 पिनतल्लि वारि पति, मेन-माम  
 वारि भार्य अंदरु अन्नारु । ना  
 सोदरी कुमालु कूतुलु, ना पिन  
 तल्लि कुमालु, मेनमाम कुमालु,  
 माँन्न वरकु अक्कडे अँडिरि ।  
 नाकु बंधुवुलु अनेकुलु अन्नारु ।  
 मा कुटुम्बमुलो चिन्न पेंद अंदरु  
 कलिसि याभै मंदि अन्नारु ।

मेरे फूफा-फूफी\*, मौसा-  
 मौसी और मामा मामी भी हैं ।  
 मेरे भानजे-भानजियाँ और मेरे  
 मौसेरे और ममेरे भाभी परसों  
 तक यहीं थे । मेरे कभी रिश्तेदार  
 हैं । हमारे परिवारमें बच्चे  
 बच्चियाँ, स्त्री-पुरुष मिलकर  
 पचास व्यक्ति हैं ।

\*फूफाका तँलुगु शब्द मेन अत्त है, पर फूफाका कोअी शब्द नहीं है ।  
 मौसीका अर्थ हिन्दीमें माकी बहिन है । इसका समानार्थी शब्द तँलुगुमें  
 नहीं है । पिन तल्लि अेक शब्द है (छोटी माँ); पेंद तल्लि अेक दूसरा  
 शब्द है—बड़ी माँ । ये दोनों शब्द मौसीके अर्थमें प्रयुक्त होते हैं । चाची  
 या काकीके अर्थमें भी प्रयुक्त होते हैं । वैसे ही पिन तंड़ि और पेंद तंड़ि  
 मौसा और चाचा या काकाके अर्थमें प्रयुक्त हैं । मौसेरे भाभी-ममेरे भाभी-  
 अनि दोनोंके लिअे अलग शब्द नहीं हैं । मौसीका पुत्र-मामाका पुत्र जैसॆ  
 प्रयोग ही चलता है ।



## ५. ना काँत अल्लु

आ कुटीरमु चूडंडि । आ कुटीरमुनकु काँच्चेंमु दूरमुन आ राजगृहमुवाँटि भवनमु कनिपिचु-चुन्नदि कदा । अदि मा पात अल्लु । मरियु अदि मा काँत अल्लु । वाकिलि तँरवाँडि । अदिगो चूडंडि मा तोट । आ वैपु अदि तँरचिन अंगणमु । अंगणमु मध्य आँक हौजु अन्नदि । अंदुलो नीटि गाँट्टुमुन्न अन्नदि ।

रंडि, मेट्लु, जाग्रत्तग रंडि । वराण्डाकु आँक वैपुन कूरचाँनु गदि अन्नदि । कूरचाँनु गदिकि पक्क गदिलो चाप परुप बडि अन्नदि । अवि रँण्डु मंचालु । अदि ना मंचमु । मंचमु पै जमखाना अन्नदि । काँस लो आ परुपुलु चुट्टि अंचि अन्नवि ।

अंदुरुगा नेनु चदुवु गदि अन्नदि । अंदुलो आँक मेज, रँण्डु अलमारुलु, चैयिगल कुर्चि आँकटि, चैअिलेनि कुर्चि आँकटि मरि विश्रांति-कुर्चि अन्नवि ।

## ५. मेरा नया घर

वह झोंपड़ी (कुटिया) देखिअे । अस झोंपड़ेसे कुछ दूरी पर वह महल जैसी अमारत दीख रही है न ? वह हमारा पुराना मकान है । और यह हमारा नया घर है । फाटक खोलिअे । देखिअे यह हमारा बगीचा । असा ओर वह खुला आँगन है । आँगनके बीच अेक छोटासा हौजा है । असमें पानीका नल भी है ।

चलिअे, सीढियाँ सम्हलकर चलिअे । बरामदेके अेक ओर बैठनेका कमरा ( बैठक ) है । बैठकसे सटे कमरेमें चटाओ बिछी हुअी है । ये दो पलंग हैं । यह मेरी खाट (चारपाओ) है । खटियापर दरी है । कोनेमें वे बिस्तर लपेटकर रखे हैं ।

सामने मेरा अध्ययन कक्षा है । असमें अेक मेज, दो अलमारियाँ, हाथवाली अेक कुर्सी, अेक बिना हाथकी कुर्सी और अेक आराम कुर्सी भी है ।

मूडव गदिलो सामानुलु अंच-  
बडि अन्नवि । अंदुलो चिन्न,  
पेंद, मूत गलवि, मूत लेनिवि,  
ताम्र-अत्तडि डब्बालु अन्नवि ।  
काँन्नि पेंट्लु अन्नवि । पक्क  
लोने अदिगो वंट गदि ।

चूडंडि, पाँय्यि, ओ पात्रलु ।  
तवा, राँट्टकर, राँट्टलु चैयुरायि,  
गरिटे, स्तूनु, चिमटा,  
जिलकड कर, गिन्नलु,  
लोटाळु, गिन्नलु पळळमुलु,  
आसनपीठलु, ओ रागि अत्तडि  
बिंदेलु, मट्टि बिंदेलु, मट्टि  
कुंडलु । अदिगो मेकुलो चाट  
त्रेलाड बडि युन्नदि । काँसलो  
अदिगो तिरुगलिरायि अन्नदि ।

अदि स्नान गृहमु । अंदु  
बक्कट्टलु, गंगालयमुलु, चम्बुलु,  
सब्बु, नून, तुवालु (खंडुवा)  
अंचि अन्नवि । अदि वेनीटि  
बायलरु-अदि नीरु निम्पे बिंदे ।

तीसरे कमरेमें सामान  
रखा है । अुसमें छोटे बड़े,  
ढक्कनदार, बिना ढक्कनके,  
तांबे पीतलके डिब्बे हैं । कुछ  
संदूकें हैं । पासहीमें वह रसोआ  
घर है ।

देखिअे-चूल्हा और ये  
बर्तन । तवा, बेलन, चकला,  
करछी, चम्मच, चिमटा,  
रओ, प्याले, लोटे,  
कटोरियाँ, थालियाँ, पीहे और  
और ये तांबे पीतलकी गगरियाँ  
मिट्टीके घड़े, मटके मटकियाँ  
हैं । खूँटीपर वह सूप है ।  
छलनी टंगी हुओ है । कोनेमें  
वह चक्की है ।

यह स्नानगृह है । अुसमें  
वाल्टियाँ, भगोने, लोटे, साबुन,  
तेल, तौलिअे, रखे हैं । यह  
गरम पानीका बम्बा और यह  
पानी रखनेका हंडा ।



वैनुकटि वैपुन आँक बावि  
 अनुन्नदि । मरियाँक वैपुन पायि-  
 काना (मरुगुदाँडि) अनुन्नदि । अदि  
 वैनुकटि वीधि । अदि मुरिकि  
 मैल वेयु बुट्ट । अिदुवलन  
 मुरुकि लेकुंडुनु । वीधि शुभ्रमुग  
 अंडुनु । अदि जलदारि । दीनि  
 गुंडा मुरिकिनीरु पारि पोवुनु ।

अदि वैनुकटि अंगणमु । अदि  
 सुन्नपु गानुग । अटिकलु, राळ्ळु,  
 सुन्नमु, मन्नु, माँदलगु सामानुलु  
 अक्कड अंचवडि अनुन्नवि ।

रॅण्डव मेड पै मुंदुकु वसारा  
 अनुन्नदि । वैनुक वयलु अनुन्नदि ।  
 ओ अिल्लु रॅण्डु मेडलदि । दीनिनि  
 मूडु मेडलदिगा चेय वलॅनु ।  
 अिदुलो अिक अरुगु कप्प वलॅनु ।

मी अिल्लु अँत बागुन्नदि ।  
 नालुगु वैपुलनु शुभ्रमुग अनुन्नदि ।  
 दुम्मु दूसरि अँक्कडनु लेदु । मीरु  
 शुभ्रत बाग अंचि अनुन्नारु । मी  
 अिटिलो कावलसिन किडकीलुन्नु  
 तलुपुलुन्नु अनुन्नवि । अिदुवल्ल  
 गदुललो चीकटि अंडुदु ।  
 कावलसिन वैलुतुरु अंडुनु । गालि  
 कूड वाग वच्चुनु । मी अिल्लु  
 मँचि गालि गल अिल्लु ।

पीछेकी ओर अेक कुआँ है ।  
 दूसरी तरफ सँडास (पाखाना)  
 है । यह पीछेकी गली है । यह  
 कूड़ा कचरा डालनेका डलिया  
 है । अिससे गंदगी नहीं होती ।  
 गली साफ रहती है । वह  
 नाली है । अुससे गंदा पानी वह  
 जाता है ।

यह पिछला आँगन है । वह  
 चूनेकी चक्की है । अीटें,  
 पत्थर, चूना, मिट्टी, कवेलू वगैरह  
 सामान अुधर रखा हैं ।

दूसरी मंजिल पर आगे  
 छज्जा है । पीछे गच्ची है ।  
 यह मकान दुमंजिला है ।  
 अिसे तिमंजिला बनाना है ।  
 अिसमें अभी छत बनानी है ।

आपका मकान कितना अच्छा  
 है । चारों ओर सफाअी है । कूड़ा  
 कचरा कहीं भी नहीं है । आपने  
 सफाअी बहुत अच्छी रखी है ।  
 आपके मकानमें काफी खिड़कियाँ  
 और दरवाजे हैं । अिससे कम-  
 रोंमें अंधेरा (अंधकार) नहीं है ।  
 काफी अुजाला (प्रकाश) है ।  
 हवा खूब चलती है । आपका  
 घर हवादार है ।

## ६. परिश्रम

आँक सामेत कद्दुः रेतु पनि  
अुत्तमम्; व्यापारम् मध्यमम्,  
सेव अधमम् ।

रेतु पनि लो धान्यमुलु प्रत्ति,  
कूर कायलु मुन्नगुनवि अुत्पत्ति  
चेय बडुनु । धान्यमुललो  
गोधुम, जाँन्न, मक्क जाँन्न,  
बाजरा, यव धान्यं (वीनि)  
तो राँट्टुलु चेयुदुरु । काँन्नि प्रदेश  
मुललो मुख्यमैन आहारमु  
बिय्यमु । आहारमुलो पप्पु चाल  
धवसर मैनदि । पँसरु, मिनुमु,  
शँनग, कंदि, मसूर (अिदु) नुँचि  
पप्पुलु चेय बडुनु । वेरु शँनग,  
नुव्वुलु, लेक आवालु लो  
नूर्न तीयुदुरु ।

रेतु पनि चेयुवाडु रेतु लेक  
किसानु अनबडुनु । पनिवारु  
कूलि पनिचेयुदुरु । रेतु अँदुलु,  
गुरँमुलु, आँण्टुलु (वीनिनि) उप-  
योगिंचुनु । वाडु पालुकारकु  
आवु, बर्रँ लेक मेकलु पँञ्चुनु ।  
पालुतो पँरुगु, पँरुगुतो वँन्नयु-  
मज्जिगयु मरि वँन्न तो नँय्यियु-  
चेय बडुनु ।

## ६. अुद्योग

अेक कहावत है—अुत्तम खेती,  
मध्यम व्यापार, कनिष्ठ नौकरी ।

खेतीसे अनाज, कपास, तर-  
कारियाँ आदि चीजें अुत्पन्न की  
जाती हैं । अनाजोंमें से गेहूँ,  
ज्वार, मका, बाजरा और जौ  
की रोटी बनाते हैं । कुछ प्रदेशोंमें  
मुख्य अन्न चावल है । आहारमें  
दाल आवश्यक है । मूँग, अुड़द,  
चना, तूर, मसूरकी दाल बनती  
है । मूँगफली, तिल, या सरसोंसे  
तेल निकालते हैं ।

खेती करनेवाला किसान  
(खेतीहर, कास्तकार) कहलाता  
है । मजदूर मजदूरी करते हैं ।  
किसान बैलों, घोड़ों या अँटोंसे  
काम लेता है । वह गायें, भैंसें  
या बकरियाँ दूधके लिये पालता  
है । दूधसे दही, दहीसे मक्खन  
तथा छाछ ( मट्ठा ) और  
मक्खनसे घी बनता है ।



व्यापारमु चैयुवारु व्यापारुलु  
 अनवडुदुरु मरियु पनि चैयुवारु  
 पनिवारु अनवडुदुरु । व्यापारि  
 किराणा, वस्त्रमुलु, मंदुलु  
 पुस्तकमुलु लेक अन्य वस्तुवुलु  
 दुकाणामुलु नडपुदुरु । वारिनि  
 दुकाणदारुलु (अंगडिवारु) अंदुरु ।  
 नगरमुललो धान्य मंडी, कूर-  
 कायल मंडी अंडुनु । वस्त्रमुलु  
 (तयारु) चैयु मिल्लुलु अंडुनु ।  
 तकली लेक राटमुतो नूलु वडिकि  
 वानिनि मग्गमुपै नेसियु  
 वस्त्रमुचेय वडुनु । वस्त्रमुलु  
 नेयुवानिनि नेतवाडु अंदुरु । साल्ले  
 वारु पारंपर्यमुग नेत पनि  
 चैयुवारु ।

वस्त्रमुलु कुट्टि अिच्चे पनि  
 चैयुवाडु दर्जी अनवडुनु । कुम्मरि  
 मट्टि बिंदेलु, कुंडलु, पात्रलु  
 माँदलगु वस्तुवुलु चेसे अुद्योगं  
 चेसँदरु । अित्तडिपनि चैयुवारु  
 रागी, अित्तडि, कंचु (अी)  
 धातुवुलतो पलु विधमुलगु  
 वस्तुवुलु चेसि अम्मदुरु । अिनु-  
 मुतो, खड्गमु, कत्ति माँदलगु  
 चिन्न पँद वस्तुवुलु चेसँदरु ।

• व्यापार करनेवाला व्यापारी  
 और नौकरी करनेवाला नौकर  
 कहलाता है । व्यापारी किराने,  
 कपड़ों, दवाबियों, पुस्तकों या  
 अन्य चीजोंकी दूकानें चलाते  
 हैं । अन्हें दूकानदार कहते हैं ।  
 शहरोंमें अनाजमंडी, सब्जीमंडी  
 होती है । कपड़ा बनानेकी मिलें  
 होती हैं । तकली या चरखेपर  
 सूत निकालकर असे करघेपर  
 बुनकर भी कपड़ा बनाते हैं ।  
 कपड़ा बुननेवालेको बुनकर  
 कहते हैं । जुलाहे पीढ़ीगत  
 पेशेवर बुनकर होते हैं ।

कपड़ा सी देनेका काम  
 करनेवालेको दर्जी कहते हैं ।  
 कुम्हार मिट्टीके घड़े, हाँडियाँ,  
 बर्तन आदि वस्तुअें बनानेका  
 पेशा करते हैं । ठठेरा तांबा,  
 पीतल, कांसा धातुओंकी कअी  
 तरहकी वस्तुअें बनाते और बेचते  
 हैं । लुहार लोहेसे फावड़े,  
 कुदाल, खुरपी, छुरी आदि  
 छोटी बड़ी चीजें बनाता है ।

वड्ढंगि काँय्यलु सरकुलु चैयु  
चुन्नाडु । अटिकमेस्त्रि अिड्लु  
कट्टुनु । कंसालि बंगारु, वेंण्डि  
तो नगलु माँदलगुनवि चैयुनु ।  
बंगारु वेंण्डि नगलु चैयुट, अम्मुट,  
काँनुट, ताकि अुंचुट (ओ) पनुलु  
चैयुवारु षरापुलु अनवडुदुरु ।  
षरापु दूकाणमुललो अुंगरमु, दंड,  
गाजु माँदलगु वस्तुवुलु दारकुनु ।

चिल्लर सामानुवारु मिरप-  
काय, मसाला, पसुपु, लवंगमु,  
वक्क, वेलकाय, तैल्ल जीलकरं,  
जीलकरं, अिगुव माँदलगु वस्तु-  
वुलु अम्मुदुरु । मिठायि दुकाणमु-  
वाडु मिठायि चैयुनु । मिठायि  
दुकाणमुलो जिलेबी, लड्डू, पेड़ा,  
बरफी, बतासा, कारपूस-अटुकुलु,  
वेंपुडु-पप्पु, पूरिक्कूर माँदलगु  
वस्तुवुलु दारकुनु ।

वस्त्रमुलु अुतुकु पनि चेसे  
वारिनि चाकलि अंदुरु ।  
मंगलि तल वेंण्टुकलु तीयु-गडुमु  
बागुचैयु-पनि चैयुनु । मादिग  
पादरक्कलु, चेंप्पुलु (अिवि) चेसे  
पनि चैयुनु ।

सुतार (बढ़ाई) लकड़ीका  
सामान बनाता है । राज मकान  
बनाता है । सुनार सोना चाँदीके  
गहने आदि बनाता है । सोना-  
चाँदीके गहने बनाने, बेचने,  
खरीदने और गिरवी रखनेका  
धंधा करनेवाले सराफ कहलाते  
हैं । सराफी दूकानमें अंगूठी, हार,  
कड़े, आदि वस्तुओं मिलती हैं ।

पंसारी मिर्च, मसाला, हल्दी,  
लौंग, सुपारी, अिलायची, सौंफ,  
जीरा, हींग, आदि चीजें बेचते  
हैं । हलवायी मिठायी बनाते  
हैं । हलवायीकी दूकानोंमें  
जलेबी, लड्डू, पेड़ा, बर्फी  
बताशे, सेव-चिवड़ा, तली हुआ  
दालें, साग-पूरी आदि चीजें  
मिलती हैं ।

कपड़े धोनेके पेशेवरको  
धोबी कहते हैं । नायी बाल  
बनाने, दाढ़ी बनानेका पेशा  
करता है । मोची जूता, चप्पल,  
बनानेका धंधा करता है ।



भारमु मोयुवाडु हमाल् अन-  
बडुनु । हमाल् तल पै गानि,  
बंडि अंडिनचो बंडिपै अंचि गानि  
बरुवु (भारमु) मोयुपनि चैयुनु ।  
तांगा बंडिवाडु तांगा बंडि  
तोलुनु, रिक्शा वाडु रिक्शा  
बंडि लागुनु ।\*

पारा पनिचेसे वारिनि  
पारादार् अनुदुरु । आंक मनिषि,  
दुकाणमु, सभ, संस्थ अथवा  
सरकार सेव चेसेवारु “नौकरु”  
अनबडुदुरु । कार्यालयमुललो  
पनि चैयुवारु क्लर्क लेक बाबु  
अनबडुदुरु ।

अंदरु समाजमु याँक्कयु देशमु  
याँक्कयु महत्वपूर्ण मैन पारि-  
श्रमिक अद्यममुलु चैयु सहयोगि  
व्यक्तुलु ।

\* हमाल का समान अर्थ रखनेवाला शब्द तेलुगुमें नहीं चलता ।  
तेलुगु प्रदेशोंमें तांगा नहीं होता । जहाँ है वहाँ तांगा ही कहलाता है ।

बोझा ढोनेवालेको हमाल  
कहते हैं । हमाल सामान सिरपर  
या गाड़ी हो तो गाड़ीपर रखकर  
पहुँचानेका काम करता है । ताँगे-  
वाला ताँगा चलानेका, रिक्शे-  
वाला रिक्शा चलानेका काम  
करता है ।

पहरा देनेवालेको पहरेदार  
कहते हैं । किसी व्यक्ति, दूकान,  
समिति, संस्था या सरकारकी  
नौकरी करनेवाला नौकर  
कहलाता है । दफ्तरोंमें काम  
करनेवाले क्लर्क या बाबू  
कहलाते हैं ।

ये सभी समाज तथा देशके  
महत्वपूर्ण अद्योग धंधे करने-  
वाले सहयोगी व्यक्ति हैं ।

## १. आंध्र-देशमु, भाष, जनलु । १. आंध्र-देश, भाषा और लोग

अे प्रदेशमुन तेलुगु माट-  
लाडबडु चुन्नदो दानिनि तेलुगु  
प्रदेशमंदुरु । तेलुगुकु मरियाँक  
पेरु आंध्र । काबट्टि तेलुगु  
प्रदेशमु आंध्र प्रदेशमु अनबडुनु;  
तेलुगु भाष आंध्र भाष अनबडुनु  
मरियु आंध्र प्रदेश निवासुलु  
आंध्रुलु अनबडुदुरु ।

आंध्र प्रदेशमु भारतमुलुनि  
पेद्द राज्यमुललो आँकटि ।  
स्वातंत्र्यमुनकु मुंदु आंध्र प्रदेशमु  
याँक्क आँक पेद्द भागमु निजामु  
राज्यमुलो अुडेंनु । स्वातंत्र्य-  
मुनकु तरुवात कूड कॉन्नि  
संवत्सरमुल वरकु आ भागमु  
हैदराबादु राज्यमु लोपलने  
अुडेंनु । अिप्पुडे कॉन्नि संवत्सर-  
मुलु क्रिदट राज्यमुल नूतन  
संगठन मयिनप्पुडु आंध्र प्रदेश  
मंतयु आँक राज्यमुग निर्मिप-  
बडेंनु ।

जिस प्रदेशमें तेलुगू भाषा  
बोली जाती है उसको तेलुगू  
प्रदेश कहते हैं । तेलुगुका दूसरा  
नाम आंध्र है । असलिये तेलुगु  
प्रदेश आंध्र प्रदेश कहलाता है;  
तेलुगु भाषा आंध्र भाषा कह-  
लाती है और आंध्र प्रदेशके  
निवासी आंध्र कहलाते हैं ।

आंध्र प्रदेश भारतके बड़े  
राज्योंमेंसे एक है । स्वतंत्रताके  
पूर्व आंध्र प्रदेशका एक बड़ा  
भाग निजामके राज्यके अन्तर्गत  
था । स्वतंत्रताके बाद भी कुछ  
वर्षोंतक वह भाग हैदराबाद  
राज्यके अन्तर्गत ही था । अभी  
कुछ वर्ष हुए राज्योंका नया  
संगठन हुआ तब तमाम आंध्र  
प्रदेश एक राज्यमें संगठित  
हुआ ।



तैलुगु द्राविड परिवारपु भाष । द्राविड परिवारपु नालुगु मुख्य भाषलु तमिळ, तैलुगु, कन्नड़, मलयाळमुलु । ओ नालुगु भाषललो अँदि दैनितुँडि पुट्टिनदि अनि चेंप्पुट कठिनमु । ओ नालुगु भाषलकु मूल रूपमु आँकटि अनि मात्रमे चेंप्प साध्य मगुनु । तैलुगु भाष श्रुति मधुरमु । भाष तैलियनि वारु कूड विनि मुग्धुलयँदरु । तमिळ प्रदेशमुलो अिप्पटिकिन्नि तैलुगु पाटल प्रचारमु अधिकमु ।

आंध्र जनुलु चाल अुदारुलु, पाटु वडुवारु, देशभक्तुलु । आंध्रुल भोजनमुलो कारमु अँक्कुव अनि जनुल अभिप्रायमु । अयिते वीरु अँन्त नैय्य पेरुगु चाडुदुरो अंत भारतमुलोनि अन्य प्रदेशपु जनुलु अरुदुगने वाडुदुरु । आंध्र देशमुन तिक्कन सोमयाजि, यर्रा प्रगड़, नन्नय्य भट्टु, श्रीनाथुडु, वेमन मुन्नगु प्रसिद्धि चैन्दिन प्राचीन कवलुँडिरि । टंगु-टूरि प्रकाशम्, कौण्डा वेंकटप्पय्य, दुगिराल गोपाल-कृष्णय्य, न्यापति सुब्बाराव मुन्नगु देश भक्त नायकुलु अुँडियुन्नारु ।

तैलुगु द्राविड परिवारकी भाषा है । द्राविड परिवारकी चार मुख्य भाषाअें तमिल, तैलुगु, कन्नड़ और मलयालम हैं । यह कहना कठिन है कि अिन चारों भाषाओंमें कौन किससे पैदा हुआ । केवल अितना कहा जा सकता है कि अिन चारों भाषाओं-का मूल रूप अेक है । तैलुगु भाषा श्रुति मधुर है । भाषा न जानने-वाले भी सुनकर मुग्ध रह जाते हैं । तमिल प्रदेशमें अब भी तैलुगु गीतोंका बहुत प्रचार है ।

आंध्र लोग बड़े अुदार, मेहनती और देश भक्त होते हैं । लोगोंका विश्वास है कि आंध्रोंके भोजनमें तीखा अधिक रहता है । पर ये जितना घी और दहीका अुपयोग करते हैं अुतना शायद ही भारतके किसी अन्य प्रदेशके लोग करते हों । आंध्र देशके तिक्कन सोमयाजी, यर्रा प्रगड़, नन्नय्य भट्टु, श्रीनाथ, वेमन आदि प्रसिद्ध प्राचीन कवि हैं । टंगुटूरि प्रकाशम्, कौंडा वेंकटप्पय्या, दुगिराल गोपाल कृष्णय्या, न्यापति सुब्बाराव आदि प्रसिद्ध देश भक्त नेता हुअे हैं ।

आंध्र देशपु गोदावरी कृष्ण नदुलु प्रसिद्धं । अत्तर पिना- किनियु आँक प्रसिद्ध नदि । आंध्र देशमुन मूडु मुख्य भाग- मुलु कलवु--( समुद्र ) तीरपु आंध्र, रायलसीम, तैलंगाणा । बंगाळाखातमुनु चेरिनट्लु अंडु भागमु तीरपु आंध्र भागमु । तीरपु आंध्रमुनकु पडमट कर्ना- टक (मैसूर) राज्यमुनकु तूर्पुन अन्न भागमु याँक्क पेरु रायल सीम । ओ भागमुनने प्रसिद्धि चैन्दिन कृष्णदेव रायुनि प्रधान नगरमु अंडेनु । ओ कारणमु वल्लने दीनि पेरु रायल (रायनि याँक्क) सीम ( प्रदेशमु ) अनि पडेनु । ओ भागमु हैदराबादु राज्यमुलो नुंडेनो अदि तैलंगाणा अन बडुनु ।

आंध्र देशकी गोदावरी और कृष्णा नदियाँ प्रसिद्ध हैं । अत्तर पिनाकिनी भी एक प्रसिद्ध नदी है । आंध्र देशके तीन मुख्य भाग हैं—तटीय आंध्र, रायल सीमा और तेलंगाना । तटीय आंध्र वह भाग है जो (समुद्र) बंगालकी खाड़ीसे लगा हुआ है । रायल सीमा उस भागका नाम है जो तटीय आंध्रके पश्चिम और कर्नाटक (मैसूर राज्य) प्रदेशके पूर्वमें है । प्रसिद्ध कृष्णदेव रायका प्रधान नगर अिसी भागमें था । अिसी कारणसे अिसका नाम रायल (रायका) सीमा (प्रदेश) पड़ा । जो भाग हैदराबाद राज्यके अंतर्गत था वह तेलंगाना कहलाता है ।

## २. कृष्णदेव रायलु

विजयनगर साम्राज्यमुनु अेलिन राजुललो श्री कृष्णदेव रायलु सुप्रसिद्धलु । वीरि तंड़ि

## २. कृष्णदेव राय

विजयनगर साम्राज्यका पालन करनेवालोंमें श्री. कृष्ण- देवराय सुप्रसिद्ध हैं । अिनके



नरस रायलकु अिहू राणुलु ।  
 पेंह राणि काँडुकु वीर नरसिंह  
 रायलु । चिन्न राणि काँडुके  
 कृष्णदेव रायलु । कृष्णदेव रायल  
 तैलिवि तेटलचेत पेंह राणिकि  
 अतनि पै असूय कलिगेंनु ।  
 अतनिनि चंपमनि आमँ मंत्रिनि  
 आज्ञापिचेंनु । तिम्मरसु अनु आ  
 मंत्रि राजकुमारुनि तन अिट  
 दाचिबेट्टि राणितो वानिनि  
 चंपित्तिनि अनेंनु । तिम्मरसु आ  
 राज कुमारुनिकि राजुलकु  
 कावलसिन सकल विद्यलु  
 नेपिरि । आ राजकुमारुडु  
 तिम्मरसुनु तंड्रिवलें भाविचि  
 “अप्पाजी” अनि पिलुचुचुडेंनु ।

नरस रायनि तरुवात वीर-  
 नरसिंह रायलु राजु अयिरि ।  
 अितकु मुंदे कृष्णदेवरायलु  
 ब्रतिकि युन्नारनुट वेंल्लडियायेनु ।  
 नरसरायलु तन तरुवात कृष्ण-  
 देवरायले राजु कावलयुननि  
 कोरिरि । अयिते अन्न अुंडग तानु  
 सिंहासनमँक्कुट तगदनि कृष्ण-

पिता नरस रायलुके दो रानियाँ  
 थीं । बड़ी रानीका पुत्र वीर  
 नरसिंहराय था । छोटी रानीका  
 पुत्र ही कृष्णदेवराय थे । कृष्ण-  
 देवरायकी बुद्धिमत्ताके कारण  
 बड़ी रानीकी अनुपर असूया  
 हुअी । असुने मंत्रीको आज्ञा दी  
 कि अनुको मार डाले । तिम्मरसु  
 नामक असु मंत्रीने राजकुमारको  
 अपने घरमें छिपा रखकर रानीसे  
 कहा कि मार डाला । तिम्मरसुने  
 असु राजकुमारको राजाओंके  
 लिअे आवश्यक सभी विद्याअें  
 सिखायीं । वह राजकुमार  
 तिम्मरसुको पितृवत् मानकर  
 ‘अप्पाजी’ कहकर पुकारता था ।

नरसरायके बाद वीर नर-  
 सिंहराय राजा हुअे । अिसके  
 पूर्व ही प्रकट हो गया कि कृष्ण-  
 देवराय जीवित हैं । नरसराय  
 चाहते थे कि अनुके बाद कृष्ण-  
 देवराय ही राजा हो । पर  
 कृष्णदेवरायकी राय थी कि बड़े  
 भाओके जीतेजी यह अुचित

देवरायलु अभिप्राय पडेंनु । वीर नरसिंहरायलु अँक्कुव कालमु ब्रतिकि युंड लेदु । वारि तरुवात कृष्णदेवरायलु सिंहासन मँक्केंनु ।

कृष्णदेवरायलु राजनीति-कोविदुडु; प्रतापशालि; देशसेवा परायणुडु । आकालमुलो अत-निनि मिंचिन योधुडु लेडु । अंदुचे तमिळ, मलयाळ, कळिंग राष्ट्र-मुलुकूड अतनिकि लो बडेंनु । अतनि कालमुलो विजय नगर साम्राज्यमु अत्युन्नत स्थितिकि वच्चेंनु ।

कृष्णदेवरायलु सकल कळल-नादरिंचेंनु । अतडु गॉप्प विद्वांसुडु; कवि; अनेक ग्रन्थमुलु रचिंचेंनु । अत-निनाश्रयिंचि “अष्टदिग्गजमुलु” अनि प्रसिद्धिकँक्किकन अँनिमिदि गॉप्प कवुलु अंडिरि । प्रति वसंत ऋतुवुलो अतडु कवि सम्मेलन-मुलु जरिपि, कवुलनु सत्करिंचु चुडेंनु । अतडु वसिंचिन प्रदे-शमु “रायल सीम ” अनवडुनु ।

नहीं है कि वह खुद गद्दीपर बैठे । वीर नरसिंहराय अधिक समय जीते नहीं रहे । अनुके बाद कृष्णदेवराय गद्दीपर बैठे ।

कृष्णदेवराय राजनीति-कोविद, प्रतापी और देश सेवा निरत थे । उस समय अनुसे बड़ा योद्धा नहीं था । अिस लिअे तमिल, मलयाल और कळिंग राज्य भी अनुके अधीन हुअे । अनुके कालमें विजयनगर साम्राज्य अत्युन्नत स्थितिको पहुँचा ।

कृष्णदेव रायने सभी कला-ओंका समर्थन किया । वे बड़े विद्वान थे । कवि थे; कअी ग्रन्थ रचे । “अष्ट दिग्गज ” नामक प्रसिद्ध आठ बड़े कवि अनुके आश्रयमें थे । हर वसंत ऋतुमें कवि सम्मेलन करवाकर उसमें कवियोंका सत्कार करते थे । वे जिस प्रदेशमें रहे वह “रायल सीमा ” कहलात है ।



### ३. त्यागराज

मन देशमुन संगीत शास्त्रमु  
 अत्तरमुन वेरु रीतिनि दक्खिण-  
 मुन वेरु रीतिनि पॅरिगॅनु ।  
 अत्तर संगीतमु “ हिन्दुस्तानि  
 संगीतमु ” अनियु दक्खिण  
 संगीतमु “ कर्नाटक संगीतमु ”  
 अनियु पिलुव बडुनु । कर्नाटक  
 संगीतमुनु पॅञ्चिनवारिलो पुरंदर-  
 दासु, त्यागराजु, मुत्तुस्वामि  
 दीक्खितुलु, श्यामा शास्त्री अनु-  
 वारु प्रसिद्धुलु । पुरंदर दासु  
 कीर्तनलु कन्नड़ भाषलो अन्नवि ।  
 त्याग राजु कीर्तनलु तैलुगुलोनु,  
 दीक्खितुलु [शास्त्रुलु कीर्तनलु  
 संस्कृतमुलोनु अन्नवि । तमिळ  
 भाषलो सयितमु अनेक गीतमुलु  
 गलवु ।

त्यागराजु तमिळदेशमुलो पुट्टि  
 पॅरिगिरि । तंजाअरु जिल्लालो  
 तिरुवारूरु अनु नगरमुन वारु  
 पुट्टिरि । आ नागरमुलोने मुत्तु-  
 स्वामि दीक्खितुलुनु श्यामा  
 शास्त्रुलुनु पुट्टिरि । त्यागराजु  
 संस्कृत भाषयु वेद वेदांगमुलु

### ३. त्यागराज

हमारे देशमें संगीत शास्त्र  
 अत्तरमें अलग रीतिसे और  
 दक्खिणमें अलग रीतिसे बड़ा ।  
 अत्तरका संगीत “ हिन्दुस्तानी  
 संगीत ” और दक्खिणका संगीत  
 कर्नाटक संगीत कहलाते हैं ।  
 कर्नाटक संगीतको बढ़ानेवालोंमें  
 पुरंदरदास, त्यागराज, मुत्तु-  
 स्वामि दीक्खित और श्यामा  
 शास्त्री नामक (लोग) प्रसिद्ध  
 हैं । पुरंदर दासके कीर्तन  
 कन्नड़ भाषामें हैं । त्यागराजके  
 कीर्तन तैलुगुमें, दीक्खित और  
 शास्त्रीके कीर्तन संस्कृतमें हैं ।  
 तमिल भाषामें भी अनेक  
 गीत हैं ।

त्यागराज तमिल देशमें ही  
 पैदा हुआ और वहीं बढ़े । तंजौर  
 जिलेके तिरुवारूर नामक  
 नगरमें] वे पैदा हुआ । उसी  
 नगरमें मुत्तुस्वामी दीक्खित और  
 श्यामा शास्त्री भी पैदा हुए ।  
 त्यागराजने संस्कृत भाषा और

नेर्चुकाँनिरि । वारिकि रामा-  
यणमु पै अँक्कुव भक्ति श्रद्धा  
कलिगँनु । वारु संगीतमु नभ्य-  
सिंचि गाँप्प संगीतज्ञुलाअँनु ।

त्यागराजु तँलुगु लो वंदल  
काँलदि कीर्तनलु रचिंचिरि ।  
गीतमुलु तँलुगुलो नुन्ननु, तमिळ  
देश मुलो व्यापिंचिनट्लु आंध्र-  
देशमुन व्यापिंच लेदु । त्याग-  
राजु परम पदमुनाँन्दि वंद संव-  
त्सरमुलकटँ अँक्कुव आयँनु ।  
नेटिकिनि वीरु रचिंचिन पाटलु  
विनियु पाडियु आनंदमु पाँन्दु  
वारु वेलकाँलदि जनुलुन्नारु ।  
संगीत समारोहमनिन त्यागराज  
कीर्तनमुलु तप्पक पाड बडुनु ।  
त्यागराज कीर्तनमु लेनि संगी-  
तोत्सवमे लेदनि चँप्पवच्चुनु ।

त्यागराजु तिरुवैयारु अनु-  
क्षेत्रमुन तन तनुवुनु तजिअि-  
चिरि । पुण्य बहुळ पंचमिनाडु  
वारु परमपदमु नाँन्दिरि ।  
अिप्पटिकिनि आ तिरुवैयारु क्षेत्र  
मुन पुण्य बहुळ पंचमिनाडु प्रति

वेद वेदांगकी शिक्षा पायी ।  
अुनकी रामायणपर बड़ी श्रद्धा  
भक्ति हुयी । वे संगीतका  
अभ्यासकर बड़े संगीतज्ञ हुअे ।

त्यागराजने तेलुगुमें सैकड़ों  
कीर्तन रचे । यद्यपि गीत तेलुगु-  
में हैं तो भी तमिल देशमें जैसे  
फैले वैसे आंध्र देशमें नहीं फैले ।  
त्यागराजको परमपद प्राप्त हुअे  
अेक सौ सालसे भी अधिक हो गअे  
हैं । आज भी अिनके रचे गीत सुन-  
कर और गाकर आनंद पानेवाले  
हजारों लोग हैं । संगीत समा-  
रोह हो तो त्यागराजके कीर्तन  
अवश्य गाअे जाते हैं । कह  
सकते हैं कि त्यागराजके  
कीर्तनोंके बिना संगीतोत्सव ही  
नहीं होता ।

त्यागराजजीने तिरुवैयार  
नामक तीर्थस्थानमें अपना तन  
त्यागा । पौष कृष्ण पंचमीको  
वे परमपदको प्राप्त हुअे ।  
आज भी अुस तिरुवैयार तीर्थ  
स्थानमें पौष कृष्ण पंचमीके



संवत्सरमुनु त्यागराजोत्सवमु  
चाल वैभवमुतो कॉनियाड वडु-  
चुन्नदि । वंदल कॉलदि संगीत-  
जुलु अप्पुडु अच्चटिकेगि चाल  
भक्ति श्रद्धतो वारि पाटलु  
पाडुदुरु । लक्षल कॉलदि जनुलु  
संगीतमु विनुटकु अक्कडिके-  
गुदुरु ।

दिन प्रतिवर्ष त्यागराजोत्सव  
बड़े वैभवके साथ मनाया जाता  
है । सैकड़ों संगीतज्ञ तब वहाँ  
जाकर बड़ी भक्ति और श्रद्धाके  
साथ अुनके कीर्तन गाते हैं ।  
लाखों लोग संगीत सुननेके  
लिअे वहाँ जाते हैं ।

#### ४. श्री राम नवमि अुत्सवमु । ४. श्री राम नवमी अुत्सव ।

श्री राम जननोत्सवमु मन  
देशमंतटयु कॉनियाडुदुरु गानि  
आंध्र देशमुलो कॉनियाडुनट्लु  
मरि अँक्कड़ कॉनियाडरु । अंदु-  
लोनु भद्राचलमुन ओ अुत्सवमु  
चाल गाराबमुतो कॉनियाड-  
वडुनु । अक्कड़ रामदासु वारु  
कट्टिन श्री रामुल वारि गुडि  
अुन्नदि । ओ संदर्भमुन अच्च-  
टिकि लक्षल कॉलदि यात्रीकुलु  
वत्तुरु ।

श्री राम-जन्मोत्सव हमारे  
देश भरमें लोग मनाते हैं पर  
आंध्र देशमें जैसे मनाते हैं  
वैसे और कहीं नहीं मनाते ।  
वहाँ भी भद्राचलममें यह अुत्सव  
बड़े समारोहसे मनाया जाता  
है । वहाँ रामदासजीका बनाया  
हुआ श्री रामजीका मंदिर  
है । अिस मौकेपर वहाँ, लाखों  
यात्री आते हैं ।

आी अत्सवमु आंध्र देशपु  
 आँक्काँक ग्राममुलोनु अटिलोनु  
 काँनियाडबडुनु । पँद् अळळलो  
 पलु दिनमुलु मुंदे दीनिकि  
 अर्पाट्लु जरुगुनु । ताटाकु  
 पंदिळळु अल्लि जनलु कूर-  
 चाँण्डुटकु चापलु परुप बडुनु ।  
 आनाडु श्री रामुल वारि पटमुनु  
 बागुग अलंकरिचि अच्चट  
 अंचुदुरु । रमारमि पदकाँण्डु  
 गंटलु पगटिकि पूज आरंभमगुनु ।  
 काँन्नि चोट्ल आी पूज रँण्डु  
 गंटल वरकु जरुगुनु । वेलकाँलदि  
 जनलु चाल श्रद्धतो  
 आ पूजनु चूचुदुरु । पूज  
 अयिन तरुवात प्रसादमु पुच्चु-  
 काँन्दुरु । श्रीराम नवमि प्रसाद-  
 मुलो वड़ पप्पु पानकमु आी  
 रँण्डु मुख्यमैनवि । पँसरु पप्पु  
 नीटिलोनान वँट्टि अप्पु कलि-  
 पिन अदि वड़ पप्पु अनबडुनु ।  
 अिंदुलो निम्मपण्डु रसमुनु  
 पच्चि मिरपकाययु कलुपुदुरु ।  
 मंचि नीटिलो बँल्लमु कलिपि

यह अत्सव आंध्र देशके हर  
 गाँव और घरमें मनाया जाता  
 है । बड़े नगरोंमें कभी दिन  
 पहलेसे ही इसकी तैयारियाँ  
 होती हैं । ताड़के पत्तोंका  
 मंडप बनाकर लोगोंके बैठनेके  
 लिये चटाइयाँ बिछाई जाती  
 हैं । उस दिन श्रीरामजीके  
 चित्रको अच्छी तरह सजाकर  
 वहाँ रखते हैं । करीब ग्यारह  
 बजे दिनको पूजा आरम्भ होती  
 है । कुछ जगहोंमें यह  
 पूजा दो बजे तक चलती है ।  
 हजारों लोग बड़ी श्रद्धाके साथ  
 उस पूजाको देखते हैं । पूजाके  
 बाद प्रसाद प्राप्त करते हैं । श्री  
 राम नवमीके प्रसादमें “वड़ा-  
 पप्पु” और “पानकम” ये  
 दोनों मुख्य हैं । मूँगकी दाल  
 पानीमें भिगोकर नमक मिलाने-  
 पर “वड़ा पप्पु” कहलाती है ।  
 इसमें नींबूका रस और हरी  
 मिर्च भी मिलाते हैं । ठंडे  
 पानीमें गुड़ मिलाकर “पानकम”



पानकमु चैयुदुरु। अिदुलो निम्म  
पंडु रसमुनु, सॉण्डियुकूड कल्पु-  
दुरु। वेसवि कालपु मध्याह्नमुन  
चाल सेपु वरकु कूरचॉनु जनुलु  
ओ प्रसादमुनु पॉन्दि तृप्तिनां-  
न्दुदुरु। पलुरु आ दिनमंतयु  
मरेमि तिनरु।

श्री रामनवमि अुत्सवमुनकु  
कॉन्नि रोजलु मुंदुनु कॉन्नि  
रोजलु तरुवातयु संगीतमु,  
नृत्यमु, कथा कालक्पेपमुलु,  
अुपन्यासमुलु मुन्नगुनवि जरु-  
गुनु। पलु चोट्ल सीता  
कल्याणमुनु श्री रामुलवारि  
पट्टाभिषेकमुनु कूड कॉन्नि-  
याडुदुरु। ओ अुत्सवमुलुन्नु  
जन्मोत्सवमु वल्ल गाराबमुग  
कॉनियाड वडुनु।

पूजलो ध्यान आवाहनादि  
षोडशोपचारमुतो रामुलवारि  
पटमु अर्चिम्प वडुनु। कॉन्दरु  
पदि दिनमुल वरकु सहस्र  
नाम अर्चन चैयुदुरु। पलुरु  
पदि दिनमुललो वाल्मीकि  
रामायण पारायणमु आद्यन्तमु  
काविन्तुरु।

बनाते हैं। इसमें नींबूका रस  
और सोंठ भी मिलते हैं। गर-  
मीके मध्याह्नमें देर तक बैठे  
रहनेवाले लोग यह प्रसाद पाकर  
तृप्त होते हैं। कभी लोग  
अुस दिन और कुछ नहीं  
खाते।

श्री रामनवमी अुत्सवके कुछ  
दिन पूर्व और कुछ दिन बाद  
संगीत, नाच, हरिकथा, व्याख्यान  
आदि होते हैं। कभी जगहोंमें  
सीता विवाह और श्री रामजी-  
का राज्याभिषेक भी लोग मनाते  
हैं। ये अुत्सव भी जन्मोत्सवके  
समान समारोहके साथ मनाये  
जाते हैं।

पूजामें ध्यान, आवाहन,  
आदि सोलहों अुपचारोंके साथ  
रामजीके चित्रकी अर्चना होती  
है। कुछ लोग दस दिनतक  
सहस्र नाम अर्चना करते हैं।  
कभी लोग दस दिनोंमें वाल्मीकि  
रामायणका पारायण आद्यन्त  
कराते हैं।

## श्री त्यागराज कीर्तन

रामभक्ति साम्राज्य—  
 मे मानवुल कब्बनो—मनस  
 (राम भक्ति)  
 आ मानवुल संदर्शन—  
 मत्यंता ब्रह्मानंदमु  
 (राम भक्ति)

ओ लागनि विवरिम्प लेनु—  
 चाल स्वानुभव वेद्यमु  
 लीला सृष्ट जगत्रय मने  
 कोलाहल त्यागराज विनुत  
 (राम भक्ति)

## श्री त्यागराज कीर्तन

हे मन ! राम भक्ति  
 साम्राज्य जिन लोगोंको लग  
 (मिल) गया अउन लोगोंसे मिलना  
 अत्यंत ब्रह्मानंद (दायक) है ।  
 (वह ब्रह्मानंद) यों है कहकर  
 वर्णन नहीं कर सकता ।

अत्यंत स्वानुभवसे ही वह  
 जाना जा सकता है; लीलामें ही  
 तीनों जगत्की सृष्टि करनेवाले  
 कोलाहलमय, त्यागराजके वंदित  
 ( जो है उस ) राम ( की )  
 भक्तिका साम्राज्य.....।

## ५. श्री काळहस्ति ।

मदरासुनुंडि कलकत्ता वॅळ्ळु  
 दारिलो मदरासुनुंडि रमारमि-  
 अँनभै मैळ्ळ दूरमुन गूडूरु अनु  
 स्टेशन कलदु। अटुले मदरासुनुंडि  
 बॉम्बायि वॅळ्ळु दारिलो रेणिगुंट  
 अनु स्टेशन कलदु । गूडूरुनुंडि  
 रेणिगुंटवरकु रैलु मार्ग मुन्नदि ।

## ५. श्री कालहस्ति ।

मद्राससे कलकत्ता जानेके  
 रास्तेमें मद्राससे लगभग अस्सी  
 मीलकी दूरीपर गूडूर नामक  
 अँक स्टेशन है। वैसे ही मद्राससे  
 बम्बयी जानेके रास्तेमें रेणिगुंटा  
 नामक अँक स्टेशन है। गूडूरसे  
 रेणिगुंटातक रेल चलती है ।



आमार्गमुलो काळहस्ति अनु  
स्टेशन अनुनदि । काळहस्ति  
पवित्र क्षेत्रमु । अक्कड़ शिवा-  
लयमु अनुनदि । अच्चटि लिंगमु  
वायु लिंगमु ।

ओ क्षेत्रमुनकु श्री काळहस्ति  
अनि पेरु । श्री अनगा सालें  
पुरुगु; काळ अनगा सर्पमु;  
हस्ति अनगा अनुग । ओ क्षेत्र-  
मुन ओ मूडु जंतुवुलु भक्ति  
सलुपुचुंडेननि कथ ।

वेल कॉलदि संवत्सरमुलकु  
मुंदु ओ क्षेत्रमुन दट्टमैन अडवि  
अुंडेनु । अच्चटि आँक शिव-  
लिंगमु अुंडेनु । आ लिंगमुनु  
प्रतिदिनमुनु आँक अनुगयु, सालें  
पुरुगुनु पामुनु पूजिचुचुंडेनु ।  
अनुग पूजिचु पुष्पमुलनु तीसि-  
वेसि सालें पुरुगु पूजिचुनु ।  
दानिनि तीसिवेसि सर्पमु पूजिचु  
चुंडेनु । अिट्लु प्रतिदिनमुनु ओ  
मूडु जंतुवुलुकुनु तमतम पुष्पमुलु  
कनुपिचक पोवुट चेत आश्चर्यमु  
कलुगुचुंडेनु ।

अुस रास्तेमें कालहस्ति नामक  
स्टेशन है । कालहस्ति पवित्र  
तीर्थ है । वहाँ शिवालय है ।  
वहाँका लिंग वायु लिंग है ।

अिस क्षेत्रका श्री कालहस्ति  
नाम है । श्रीका अर्थ मकड़ी  
है; काल माने सर्प; और हस्ति  
माने हाथी । कथा है कि अिस  
क्षेत्रमें ये तीनों जीव भगवानकी  
भक्ति करते थे ।

हजारों वर्ष पूर्व अिस क्षेत्रमें  
घना वन था । वहाँ अेक शिव-  
लिंग था । अुस लिंगकी प्रति-  
दिन अेक हाथी, अेक मकड़ी  
और अेक सांप पूजा करते थे ।  
जिन फूलोंसे हाथी पूजा करता  
था अुसे मकड़ी हटाकर पूजा  
करती थी; अुसको हटाकर  
सांप पूजा करता था । अिस  
तरह प्रतिदिन अिन तीनों  
जीवोंको अपने अपने फूलोंके  
न दिखाओ पड़नेसे आश्चर्य  
होता था ।

आँकनाडु अेनुग अक्कड़े  
 'निलवडि अेमि जरुगुचुन्नदनि  
 चूचेंनु । सालें पुरुगुन्नु सर्पमुनु  
 अक्कड वच्चुट चूचि दानिकि  
 कोपमु वच्चेंनु । अदि आ  
 रेंण्टिनि चंप प्रयत्तिचेंनु । अयिते  
 आ रेंडुनु अेनुग यॉक्क ताँण्डपु  
 नासिका रंध्रमुन प्रवेशिचेंनु ।  
 ओ बाध सहिप लेक अेनुग  
 व्याकुल माँदेंनु । तन ताँण्डमुनु  
 पलु मारु भूमि पै काँटेंनु ।  
 अयिते सर्पमुनु सालें पुरुगुनु  
 अक्कड़े अुंडि पोयेंनु । अेनुग  
 पूजचेय लेनुंदननु ताँण्डमु लोपलि  
 बाध वल्लनु अक्कड़े अुंडि चच्चि  
 पोयेंनु । सर्पमुनु सालेंपुरुगुन्नु  
 ताँण्डमु लोपलने चच्चिपोयेंनु ।  
 परम शिवुडु ओ मूडु जीव-  
 मुलकुनु मोक्षमु अिच्चेंनु ।  
 ओ कारणमु चेतने ओ कषेत्र-  
 मुनकु ओ पेरु कलिगेंनु ।

एक दिन हाथी वहीं खड़ा  
 होकर देखता था कि क्या  
 होता है । मकड़ी और साँपको  
 वहाँ आते देखकर उसे क्रोध  
 आया । उसने उन दोनोंको  
 मारनेका प्रयत्न किया । पर  
 वे दोनों हाथीकी सूँड़के नासिका  
 रंध्रमें घुस गये । यह पीड़ा  
 सह न सकनेसे हाथी व्याकुल  
 हुआ । (उसने) अपनी सूँड़ कभी  
 बार जमीन पर दे मारी। पर साँप  
 और मकड़ी वहीं रह गयीं ।  
 पूजा न कर सकनेसे और सूँड़के  
 अन्दरके दर्दसे हाथी वहीं (रहकर)  
 मर गया । साँप और मकड़ी  
 भी सूँड़के अन्दर ही मर गयीं ।  
 परम शिवने अिन तीनों जीवोंको  
 मोक्ष दिया । इसी कारणसे  
 अिस कषेत्रका यह नाम पड़ा ।



## ६. राज राज नरेन्द्रुडु ।

सुमारु वेयि संवत्सरमुलकु मुंदु आंध्र देशमुन चालुक्य वंशपु राजुलु पालिचिरि । वीरि राजधानि वेगि पट्टणमु । वीरु अेलिन देशमु वेगि देशमु ।

चालुक्य राजुललो राजराज नरेन्द्रुडु चाल गाँप्पवाडु । वीडु क्री. श. १०२२ व संवत्सरमुन सिंहासनारूढुडय्येनु । अितडु गोदावरि नदि तीरमुन आँक नगरमु निर्मिञ्चि दानिनि तन राजधानिग चेसिकॉनैनु । आ नगरमे राजमहेन्द्रवरमु ।

राज राजनरेन्द्रुडु विद्यावंतुडु । अितनिनि आश्रयिचि अनेक कवुलु अुंडिरि । वारिलो नारायण भट्टु, नन्नय्य भट्टु अनुवारु चाल पेरु वडिन कवुलु । नारायण भट्टु कन्नड भाषलो पण्डितुडु । आ भाषलो अतडु महाभारत-मुनु ब्रासँनु ।

## ६. राज राज नरेन्द्र ।

लगभग अेक हजार वर्ष पूर्व आंध्र देशमें चालुक्य परिवारके राजा राज करते थे । अिनकी राजधानी वेगिपट्टणम थी । जिस देशका ये पालन करते थे वह वेगि देश था ।

चालुक्य राजाओंमें राज राज नरेन्द्र बहुत बड़े थे । ये सन् १०२२ आी. में गद्दीपर बैठे । अिन्होंने गोदावरी नदीके किनारे अेक नगर वसाकर अुसको अपनी राजधानी बनाया । वही नगर राजमहेन्द्रवरम (राजमण्ड्री) है ।

राज राजनरेन्द्र विद्वान थे । अिनके आश्रयमें कअी कवि थे । अुनमें नारायण भट्ट, और नन्नय्या भट्ट बड़े नामी कवि थे । नारायण भट्ट कन्नड भाषाके विद्वान थे । अुस भाषामें अुन्होंने महाभारत लिखा ।

राज राजनरेन्द्रु महाभारत-  
मुनु तैलुगुलो ब्रायिप निश्चयि-  
चैनु । नन्नय्य भट्टु नारायण  
भट्टु सहायमुतो आंध्र महा-  
भारतमु ब्राय नारंभिचैनु । आदि  
पर्वमुनु सभा पर्वमुनु ब्रासि  
अरण्य पर्वमुलो कान्त भागमु  
ब्रासि अतडु चनि पोयैनु । तरु-  
वात मूडु वंदल संवत्सरमुल  
वरकु ओ महाभारतमुनु ब्रायु-  
वारु अँवरु लेक पोयिरि । मूडु  
वंदल संवत्सरमुलु गडचिन पिदप  
तिक्कन, यरैन अनु रैण्डु कवुलु  
आ महाभारतमुनु पूर्ति चेसिरि ।  
अिट्लु आंध्र महाभारतमुनु  
रचिचिन वारु मूडु कवुलु ।  
मूल प्रेरण-कर्त राज राज  
नरेन्द्रु ।

तमिळ देशमुलोनि तंजावूरुनु  
पालिचिन चोळ राजुलकुनु  
वेंगिराजुलकुनु अदो सम्बन्ध  
मुंडैनु अनि तैलियु चुन्नदि ।

राज राज नरेन्द्रने तेलुगू  
भाषामें महाभारत लिखानेका  
निश्चय किया । नन्नय्य भट्ट  
नारायण भट्टकी सहायतासे  
आंध्र महाभारत लिखने लगे ।  
आदि पर्व और सभा पर्व  
लिखनेके बाद अरण्यपर्वमें कुछ  
अंश लिखकर वे मर गये ।  
असके बाद तीन सौ सालतक  
अस महाभारतको लिखनेवाला  
कोही नहीं हुआ । तीन सौ साल  
बीतनेके बाद तिव्कन और  
यरैन नामक दो कवियोंन अस  
महाभारतको पूरा किया । यों  
आंध्र महाभारतके रचयिता  
तीन कवि थे । मूल प्रेरणा  
देनेवाले राज राज नरेन्द्र थे ।

मालूम होता है कि तमिल  
देशके तंजौरका पालन करने-  
वाले चोल राजाओं और वेंगि  
राजाओंका कोही सम्बन्ध था ।



## ७. तिरुपति

भारत देशपु गाँप्प कषेत्र-  
मुललो तिरुपति आँकटि । अदि  
मदरासु नुंडि रमारमि वंद  
मैळ्ळ दूरमुन पश्चिमोत्तरमुन  
अुन्नदि । दीनिनि अुत्तर  
भारतीयुलु बालाजी अंदुरु ।  
तिरुपतिकि 'अेळुमल्ल' अनि  
आँक पेरु कलदु । अदि तमिळ  
पदमु । दीनिकि अेडु काँण्डलु  
अनि अर्थमु ।

तिरुपतिकि रँण्डु भागमल्लु  
कलवु । आँकटि कीळ् तिरुपति  
अनियु मरि याँकटि मेल् तिरु-  
पति अनियु पिलुव बडुनु । कीळ्  
अनगा किंद; मेल् अनगा पैग ।  
किंद अुँडु नगरमु पेंददि । अयिते  
मुख्य मैन देवालयमु पै तिरु-  
पतिलोने अुन्नदि । अच्चटिकि  
वैळ्ळुटकु अेडु काँण्डलु दाट  
वल्युनु । अटु तस्वात काँण्ड पै  
गुडि अुन्नदि कावट्टि आ अूरिकि  
अेडु काँण्डलु अनि पेरु कलिगैनु ।

## ७. तिरुपति

भारतके बड़े तीर्थ स्थानोंमें  
तिरुपति अेक है । यह मदरास-  
से करीब अेक सौ मील दूर पर  
पश्चिमोत्तरकी ओर है । अिसको  
अुत्तर भारतके लोग बालाजी  
कहते हैं । तिरुपतिका "अेळु-  
मल्ल" अेक दूसरा नाम है । यह  
तमिळ शब्द है । अिसका अर्थ  
है "सात पहाड़ ।"

तिरुपतिके दो हिस्से हैं ।  
अेक कील तिरुपति और दूसरा  
मेल तिरुपति कहलाता है ।  
'कील' माने नीचे है; मेल  
माने अूपर । नीचे जो नगर है  
वह बड़ा है । पर प्रधान मंदिर  
अूपरके तिरुपतिमें ही है । वहाँ  
जानेके लिये सात पहाड़ पार  
करने पड़ते हैं । अुसके बाद  
पहाड़पर मन्दिर है अिसलिये  
अुस नगरका "सात पहाड़"  
नाम पड़ा ।

ओ गुडि श्री वेंकटेश्वरुल  
गुडि । आदि शेषुनि काण्डगा  
चेसि दानि पै भगवंतुडु वसिंचु  
चुन्नाह । आ काण्डकु शेषाचल  
मनि पेह । पै गुडिलो अम्मवा-  
रि कि प्रत्येकमुगा गुडि लेदु ।  
लक्ष्मी वानियंदे निवसिंचुट  
वल्ल भगवंतुनिकि श्रीनिवासुडु  
अनि पेह । किदि तिरुपति नुंडि  
रमारमि मूडु मैळ्ळ दूरमुन  
तिरुचानूर अनु अूरिलो अम्म-  
वारि गुडि अुन्नदि । अम्मवारि  
पेह “ अलमेलमंगै तायार । ”

तिरुपतिकि प्रति दिनमुनु  
वंदल काँलदि यात्रीकुलु वत्तुरु ।  
ओ देवस्थानमुनकु प्रति नॅल  
यात्रीकुलवल्ल कलुगु आदायमु  
रॅण्डु लक्ष्मल रूपयलकंटै अँक्कुव ।  
दशहरा समयमुन अिच्चट ब्रह्मो-  
त्सवमु जरुगुनु ।

ओ देवालय कार्यमुलनु निर्व-  
हिंचु समिति “ तिरुपति देव-  
स्थानम् कमिटी ” अनवडुनु ।  
ओ समिति प्रति दिनपु पूजलु,

यह मन्दिर श्री वेंकटेश्वरजी-  
का है । आदिशेषको पहाड़ बना-  
कर अुसपर भगवान रहते हैं ।  
अुस पहाड़का नाम शेषाचलम्  
है । अूपरके मन्दिरमें भगवतीका  
अलग मंदिर नहीं है । लक्ष्मी  
अुसीमें रहती हैं अिसलिअे भग-  
वानका श्रीनिवास नाम है ।  
निचले तिरुपतिसे करीब तीन  
मीलपर तिरुचानूर नामक नगर-  
में भगवतीका मन्दिर है । भग-  
वतीका नाम “ अलमेल मंगै  
तायार ” है ।

तिरुपतिमें प्रतिदिन सैकड़ों  
यात्री आते हैं । अिस देवस्थान-  
की यात्रियोंसे प्रति मास आय दो  
लाख रुपयोंसे अधिक की है ।  
दशहरेके समय यहाँ ब्रह्मोत्सव  
( वार्षिक अुत्सव ) होता है ।

अिस मन्दिरके काम संभा-  
लनेवाली समिति “ तिरुपति  
देवस्थानम् कमिटी ” कहलाती  
है । यह समिति दैनिक पूजाओं,



अुत्सवमुलु, गुडिमरामत्तु मुन्नगु  
कार्यमुलनु नडुपुनु । यात्रीकुलकु  
कावलसिन सौकर्यमुलु ओ  
समिति चेसि अुन्नदि । क्रिदि  
तिरुपतिलो स्टेशनकु समीपमुन  
ऑक पॅदद सत्रमु अुन्नदि । अंडु  
वंदल कॉलदि यात्रीकुलु अंड  
वच्चुनु । वारिकि वंट चेसि-  
कॉनुटकु पात्रमुलु अिव्वबडुनु ।  
क्रिन्दि तिरुपति नुंडि (ओ सत्र-  
मुनुंडि) कॉण्ड पै मोटरु बस्सुलु  
पोवुचुन्नवि । ओ मोटरुलु  
अिप्पुडे दादापु पदि संवत्सर  
मुलनुंडि पोवुचुन्नवि । अंतकु  
पूर्वमु कॉण्ड पै यात्रीकुलु नडचिये  
पोयॅडि वारु । अिप्पटिकिनि  
अनेकुलु नडचि पोवुचुन्नारु ।

ओ समिति पलु विद्यालयमुलु  
नडुपु चुन्नदि । वेंकटेश्वर विश्व  
विद्यालयमु देवस्थान सहायमु  
वल्लने आरंभमायॅनु ।

अुत्सव, मन्दिरकी मरम्मत,  
आदि काम कराती है । यात्रियोंके  
लिअे आवश्यक सुविधाअें  
अिस समितिने दी हैं । निचले  
तिरुपतिमें स्टेशनके पास अेक  
बड़ी धर्मशाला है । वहाँ सैकड़ों  
यात्री ठहर सकते हैं । अुनको  
रसोओके लिअे वर्तन दिअे जाते  
हैं । निचले तिरुपतिसे (अिस  
धर्म शालासे) पहाड़पर मोटर  
वसॅ जाती हैं । ये मोटरें अभी  
करीब दस सालसे चलती हैं ।  
अुसके पूर्व पहाड़पर यात्री पैदल  
ही जाया करते थे । अब भी  
कओी लोग पैदल ही जाते हैं ।

यह समिति कओी विद्यालय  
चलाती है । वेंकटेश्वर विश्व  
विद्यालय देवस्थानकी सहायतासे  
ही शुरू हुआ है ।

## ८. कण्णप्प नायनार ।

श्रीकालहस्तिनि सम्बन्धिचिन  
 आँक कथ विनुडि । आ क्खेत्र-  
 मुलो आँक वेटकाडु अुँडेंनु । वाडु  
 प्रतिदिनमु भगवंतुनि अर्चिपक  
 अे पनियु चेयडु । प्रतिदिनमु  
 अुदयमुन पुष्पमुलु सेकरिचि  
 भगवंतुनि अर्चिचुनु ।

आँकनाडु भगवंतुडु वानिनि  
 परीक्खिप निश्चयिचेंनु । आ  
 वेटकाडु अुदयमुन पुष्पमुनु तीसि  
 काँनि रागा लिंगमुयाँक्क कंठि  
 नुँडि रक्तमु कारुट चूचेंनु । चाल  
 जालिपडि वाडु आ कंठिनि  
 परीक्खिचेंनु । अंडु देव्व तगिलि  
 अुँडेंनु । वण्टने वाडु तन चेतितो  
 तन कन्नुनु तीसि लिंगमुयाँक्क  
 कंठिलो दानिनि अुंचेंनु । रक्तमु  
 कारुट आगेंनु । अतनिकि चाल  
 संतोषमु कलिगेंनु । मरुनाडु वाडु  
 पूजिप वच्चिचिप्पुडु मरियाँक्क कंठि  
 नुँडि नैत्तुरु कारुचुँडेंनु । भगवंतुडु  
 नन्नु परीक्खिचु चुन्नाडु अनि

## ८. कण्णप्प नायनार ।

श्री कालहस्तिसे सम्बन्ध  
 रखनेवाली अेक कहानी सुनिअे ।  
 अुस क्खेत्रमें अेक शिकारी रहता  
 था । वह प्रतिदिन भगवानकी  
 (पूजा) किअे बिना कोअी काम  
 नहीं करता था । वह प्रतिदिन  
 सबेरे फूल अिकट्ठा करके  
 भगवानकी अर्चना करता था ।

अेक दिन भगवानने अुसकी  
 परीक्षा लेनेका निश्चय किया।  
 जब वह शिकारी सबेरे फूल  
 लेकर आया तब अुसने देखा कि  
 लिंगकी अेक आँखसे रक्त बह रहा  
 है । बहुत दुखी होकर अुसने  
 अुस आँखकी परीक्षा की ।  
 अुसमें चोट लगी थी । तुरंत  
 अुसने अपने हाथसे अपनी आँख  
 निकालकर लिंगकी आँखमें  
 अुसको बैठा दिया । रक्तका  
 बहना बंद हो गया । अुसे बड़ा  
 आनंद हुआ । दूसरे दिन जब  
 वह पूजा करने आया तब दूसरी  
 आँखसे रक्त बहता था । यह



अँरिगि आ वेटकाडु तन रँण्डव  
कंटिनि अिव्व निश्चयिच्चेंनु ।  
अयिते रँण्डव कंटिनि तीसिन  
पिदप भगवंतुनि कन्नुनु गुत्तिचि  
अक्कड़ तन कंटिनि अँचुट अँटुल?  
भगवंतुनि कंटिपै तन चँप्पु सहित-  
मैन कालुनुंचि आ गुर्तुतोने  
तन मरि आँक कंटिनि तीसि  
अच्चट स्थापिच्चेंनु । अतनि  
औदार्युमुनु, बुद्धि चमत्कारमुनु  
चूचि भगवंतुडु संतर्सिचि अतनि-  
कि दर्शन मिच्चेंनु ।

तमिळ देशपु भक्त कवुलले  
वैण्णव कवुलकु “आळ्वारुलु”  
अनियु शैव कवुलकु “नायन्मारु”  
अनियु पेरु । नायन्मारु अरवै  
मूडु । अंदुलोनॉकडु “कण्णप्प  
नायनारु” । ‘कण्णप्प’ कु अर्थमु  
‘कंटि’ । पै वेटगानिके ओ पेरु ।  
कन्नु भगवंतुनिकि समर्पिचि-  
नंदुन अतनिकि ओ पेरु कलिगेंनु ।  
अतनि मुंदु पेरु अमो !

जानकर कि भगवान मेरी  
परीक्षा ले रहे हैं उस शिकारीने  
अपनी दूसरी आँख देनेका  
निश्चय किया । पर दूसरी  
आँखको निकालनेके बाद  
भगवानकी आँखको पहचानकर  
वहाँ अपनी आँख रखे कैसे ?  
भगवानकी आँखपर चप्पल-युक्त  
अपना पैर रखकर उसी पहचानसे  
अपनी दूसरी आँख निकालकर  
उस जगहपर रख दी । उसकी  
अुदारता और बुद्धि चमत्कार  
देखकर भगवान प्रसन्न हुअे और  
अुन्होंने अुसे दर्शन दिअे ।

तमिल देशके भक्त कवियोंमें  
वैण्णव कवियोंका “आल्वार”  
और शैव कवियोंका “नायन्मार”  
नाम है । नायन्मार तिरसठ हैं ।  
अुनमें अेक ‘कण्णप्प नयनार’ है ।  
‘कण्णप्प’ का अर्थ ‘आँखवाला’  
है । अपर्युक्त शिकारीका ही  
यह नाम है । आँखें भगवानको  
अर्पित कीं अिसलिअे अुसका यह  
नाम हुआ । अुसका पूर्व-नाम  
न जाने क्या था !

## ९. सामंतलु

१. नदि दाटे दाक माम  
मल्लय्या, दाटिन तरुवात  
बोडि मल्लय्या ।

२. अत्ता ऑकिंठि कोडले ।

३. अडुसु ताँक्कनेल कालु  
कडुगनेल ?

४. ता जँडु कोति वन मँल्ल  
जँरिचँ ।

५. अँन्त चँट्टुकंत गालि ।

६. नलुगुरितो पाटु नारायण ।

७. पिट्टु काँञ्चम् कूत घनम् ।

८. दुन्न ओनिंदंटे दूडनु  
कट्टुन्नट्लु ।

## ९. कहावतें

नदी पार करो तबतक तो  
(नाविक) मामा मल्लय्या हैं;  
पार पहुँचनेके बाद गंजा  
मल्लय्या । ("काज परे कुछ और  
है काज सरे कुछ और")

सास भी ( कभी ) किसी  
घरकी बहू ही तो (थी) ।

कीचड़ क्यों रौंघो, पैर क्यों  
धोओ ?

स्वयं भ्रष्ट (हुअे) बंदरने  
सारा वन भ्रष्ट किया ।

जितने पेड़ हैं (अुनकी)  
अुतनी हवा ।

(आप अकेले जिसे कर न  
पाअें अुसे) चार लोगोंके  
साथ कर डालना ।

चिड़िया तो छोटी पर शोर  
बड़ा (छोटे मुँह, बड़ी बात) ।

मानों किसीने कहा कि  
सांड़ने बच्चा दिया तो कहा  
बछड़ेको खंभेसे बांधो ।



९. अूरिलो पॅण्डिल, कुक्ककु गाँवमें शादी—कुत्तोंमें  
संदडि । हलचल ।

१०. अंदर पल्लकि अँक्किते यदि सब पालकीपर सवार  
मोसेवारँवर ? हों तो ढोअे कौन ?

### १० कवितलु

१. सरसमु विरसमु कौरके  
परिपूर्ण सुखंबु लधिक  
बाधल कौरके  
पँरुगुट विरुगुट कौरके  
धर दग्गुट हँच्चु कौरके  
तथ्यमु सुमती ।

### १० कविताअें

मित्रता शत्रुताके लिअे ही है  
परिपूर्ण सुख अधिक बाधा  
(पीड़ा, कष्ट) के लिअे है;  
बढ़ना टूटनेके लिअे ही है  
दाम (कीमत) का घटना बढ़ने-  
के लिअे ही है—यह सत्य है ।

२. कमलमुलु नीट बासिन  
कमलाप्तुनि रश्मिशोकि  
कमलिन भंगिन्  
तमतम नॅलवुलु तप्पिन  
तम मित्रुलु शत्रुलौट  
तथ्यमु सुमती ।

कमल (यदि) पानी (को) छोड़े  
(तो) कमलाप्त (सूर्य) की रश्मि  
(पाकर) के लगनेसे जैसे सुख  
जाता है, (वैसे ही) अपना अपना  
स्थान यदि छूट जाअे तो अपने  
मित्रका शत्रु बनना निश्चित है ।

३. कनकपु सिंहासनमुन

शुनकमुकूर्चुड बँट्टि

शुभलग्नमुनन्

दनरग बट्टमु कट्टिन

वैनुकटि गुण मेल मानु

गदरा सुमती ।

सोनेके सिंहासनपर यदि

कुत्तेको बिठाकर शुभ लग्नमें

मुकुट पहनाओ (तो भी) वह

अपना पिछला गुण क्यों छोड़े

—है न ?

४. पुत्रोत्साहमु तंड़िकि

पुत्रुडु जन्मिचि नपुडें

पुट्टु-जनुला

पुत्रुनि कनुगॉनि पाँगडग

पुत्रोत्साहंबु नाडु पाँन्दुरु

सुमती ।

पिताका पुत्रोत्साह पुत्रके

जन्मते ही पैदा नहीं होता ।

पुत्रजन्मका वास्तविक आनन्द

अस दिन मिलता है जब

पुत्रको देखकर लोग अस (पुत्र)

की प्रशंसा करते हैं ।

५. अप्पिच्चु वाडु वैचुडु

नैप्पुडु नैडतँगक पारुनेरुनु

द्विजुडुं

जाँप्पडिन अरु नुंडुमु

चाँप्पडकुन्नट्टि यूरु

चौरकुमु सुमती ।

अधार देनेवाला, वैद्य, सदा

बिना विच्छेदके बहनेवाली नदी,

ब्राह्मण—ये जहाँ प्रविष्ट हैं अस

नगरमें रहो; जहाँ ये प्रविष्ट

नहीं हैं वहाँ तुम प्रविष्ट न

होओ ।



६. उपकारिकि नुपकारमु      उपकारीका उपकार करना  
 विपरोतमु कादु सेय      कोओ विचित्र ( बात ) नहीं ।  
                                  विवरिपंगा      व्योरा बताओ तो ( मालूम  
 नपकारिकि नुपकारमु      पडेगा कि ) अपकारीकी बुराअि-  
                          नैपमैन्तक सेयुवाडु      योंकी चिन्ता किअे बिना अुसका  
                          नेपैरि सुमती ।      उपकार करनेवाला ही विज्ञ है ।

७. अैनग ननग राग मतिश      बार बार गानेसे राग अच्छा  
                                  अिल्लुचुनुंडु      बनता है, बार बार खानेसे  
 तिनग तिनग वेमु तिय्य नुंडु      नीम मीठा बनता है ।  
 साधनमुन पनुलु समकूरु      अस संसारमें साधनसे काम  
                                  धरलोन      बनते हैं । ( वेमन नामक कवि-  
 विश्वदाभिराम विनुरवेम ।      के सब पद्योंके अन्तमें " विश्व-  
                                       दाभिराम विनुर वेम "—सुनरे  
                                       वेमा विश्वका अभिराम—रहता  
                                       है ।

८. चंप दगिन यट्टि शत्रुवु तन      मारने योग्य शत्रु ( यदि )  
                                  चेत      हाथमें आजाव तो ( अुसकी )  
 जिक्कॅनेनि कीडु सेयरादु      बुराओी नहीं करनी चाहिअे;  
 पाँसग मेलु चेसि      अुचित भलाओी करके विदा  
                          पाँम्मनुटे चालु      करना ही पर्याप्त है । ( विश्व )  
 विश्वदाभिराम विनुरवेम

९. लोभिवानि जंप

लोकंबु लोपल

मंदु वलदु वेरें मतमु गलदु  
पैक मडिगिनंत भग्गुन पडि  
चच्चु

विश्वदाभिराम विनुर वेम ।

लोभीको (कंजूसको) मारने

(के लिअे) संसारमें अन्य दवा  
नहीं चाहिअे; अुपाय अेक है;  
पैसा मांगते ही ( वह ) धचसे  
गिरकर मर जायगा । (विश्व)

✓ १०. कुलमुलो नाँकण्डु

गुणवंतुडुंडिन

कुलमु वॅलयु वानि गुणमुचेत  
वॅलयु वनमुलोन

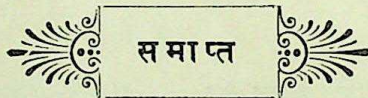
मलयजंबन्नट्लु

विश्वदाभिराम विनुर वेम ।

परिवारमें यदि अेक गुण

वान हो तो अुसके गुणसे परि-  
वार प्रतिष्ठित होगा । वनमें  
अेक चन्दन हो तो अुससे जैसा  
वन

(विश्व)





# तल्लुगु लिपि

## स्वर

|    |    |    |    |    |    |    |    |   |   |
|----|----|----|----|----|----|----|----|---|---|
| అ  | ఆ  | ఇ  | ఈ  | ఉ  | ఊ  | ఋ  | ౠ  | అ | ఱ |
| अ  | आ  | इ  | ई  | उ  | ऊ  | अृ | अृ | अ | अ |
| ఎ  | ఏ  | ఐ  | ఒ  | ఓ  | ఔ  | అం | అః |   |   |
| अँ | अे | अै | अॉ | अो | अौ | अं | अः |   |   |

तल्लुगु में अृ का दीर्घ, अे का ह्रस्व, ओ का ह्रस्व, ये तीन स्वर अधिक हैं। इनके अलावा लृ और उसका दीर्घ—ये दो अधिक स्वर भी हैं।

अै के उच्चारण में हिन्दी में बहुधा अे की ध्वनि सुनाई पड़ती है। पर तल्लुगु में अि की ध्वनि सुनाई पड़ती है। वैसे ही ओ के उच्चारण में तल्लुगु में ओ की ध्वनि सुनाई पड़ती है। अं का उच्चारण अम् स्पष्ट मकार युक्त है।

आम तौर पर तल्लुगु स्वरों के उच्चारण में हिन्दी की अपेक्षा कुछ अधिक समय लगता है। अ का उच्चारण हिन्दी की अपेक्षा कुछ अधिक समय का है पर इतना नहीं कि दीर्घ बन जाए।

వ్యంజన

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| క | ఖ | గ | ఘ | జ |
| క | ख | ग | घ | ङ |
| च | च | ज | झ | ञ |
| च | छ | ज | झ | ञ |
| ట | ఠ | డ | ఢ | ణ |
| ट | ठ | ड | ढ | ण |
| త | థ | ద | ధ | న |
| त | थ | द | ध | न |
| ప | ఫ | బ | భ | మ |
| प | फ | ब | भ | म |

|   |   |   |   |
|---|---|---|---|
| య | ర | ల | వ |
| य | र | ल | व |
| శ | ష | స | హ |
| श | ष | स | ह |

క్ష      ఙ      ఞ  
 २      २      ४



नागरी में जितने व्यंजन हैं वे सब तेलुगु में हैं। कुछ और अधिक भी हैं। च वर्ग में दो नए अक्षर हैं— च और ज के रूपान्तर। इनका उच्चारण करीब करीब त्स और दूज के समान है। इन अक्षरों के भेद के कारण अर्थ में अंतर आ सकता है। 'चाप' का अर्थ मछली है और 'त्साप' का अर्थ चटाई है। एक नया अक्षर ఱ है; यह र का तीव्र रूप है पर 'र' नहीं। एक और नया अक्षर ఴ महाराष्ट्र अक्षर के समान है।

अन्य व्यंजनों का उच्चारण हिन्दी का सा है।

### बारहखड़ी

स्वरो के चिन्ह तेलुगु में यों हैं:

|   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| అ | ఆ | ఇ | ఈ | ఉ | ఊ | ఋ | ౠ | ఎ | ఐ |
| — | • | ః | ౌ | ౡ | ౢ | ౣ | ౤ | ౥ | ౦ |

|   |   |   |   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ఎ | ఏ | ఐ | ఒ | ఓ | ఔ | అ | ఐ |
| ౦ | ౧ | ౨ | ౩ | ౪ | ౫ | ౬ | ౭ |

आ की मात्रा अक्षरों के ऊपर लगायी जाती है। पर ష (प) ష (फ) ష (ष) और ష (स) में बीच में लगायी जाती है: ష, ష, ష आदि ష, ష, ష, ష. ह ష अक्षर में पहले ही — चिन्ह है इसलिए उसका दीर्घ ష है।

अि की मात्रा अक्षरों के ऊपर लगायी जाती है : ई, ॠ, ॡ, ॢ आदि पर ॣ, घि, ङि, टि, छि, णि, ॠ, पि, ॡ, फि, ॢ (यि) ॣ (लि) ॡ (षि) ॠ (हि) ये विशेष ध्यान देने योग्य हैं ।

अी की मात्रा अि की मात्रा के समान लगायी जाती हैं ।

अु और अू की मात्राएँ अक्षर के बाजू में दाईं ओर जोड़ी जाती हैं ।

क, क् (कु, कू) ङ, ङ् (ङु, ङू) छ, छ् (चु, चू) आदि ।  
ज, ज् (जु, जू) ष, ष् (पु, पू) फ, फ् (फु, फू) व, व् (वु, वू) ये विशेष रूप हैं ।

अृ और अॄ की मात्राएँ व्यंजनों से अलग दाँओं ओर बाजू में लगाए जाते हैं । कॄ, षॄ, ङॄ, ॠॄ आदि ।

अे ह्रस्व और दीर्घ दोनों की मात्राएँ अक्षर के ऊपर लगायी जाती हैं : उ, ॠ, ॡ आदि ॢ, ॣ, ।, ॥ ये विशेष रूप हैं ; भिन व्यंजनों में 'अे' की मात्रा व्यंजन को नहीं छूती ।

अै की मात्रा के दो खंड हैं—एक अक्षर के ऊपर और दूसरा अक्षर के नीचे लगाया जाता है । ॢ, ॣ, । आदि ।



ओ, ह्रस्व और दीर्घ तथा औ की मात्राएँ अवधरो के ऊपर लगायी जाती हैं । ङा, ङाँ, ङा, षा, षाँ, षा, षा आदि ।

अनुस्वार और विसर्ग की मात्राएँ अवधर के पार्श्व में दाँऔं ओर अलग लगायी जाती हैं ।

|   |    |    |    |    |    |    |    |
|---|----|----|----|----|----|----|----|
| क | का | कि | की | कु | कू | कृ |    |
| ख | खा | खि | खी | खु | खू | खृ |    |
| ङ | ङा | ङि | ङी | ङु | ङू | ङृ | ङः |
| च | चा | चि | ची | चु | चू | चृ | चः |
| छ | छा | छि | छी | छु | छू | छृ | छः |
| ज | जा | जि | जी | जु | जू | जृ | जः |
| झ | झा | झि | झी | झु | झू | झृ | झः |
| ट | टा | टि | टी | टु | टू | टृ |    |
| ठ | ठा | ठी | ठी | ठु | ठू | ठृ | ठः |
| ड | डा | डि | डी | डु | डू | डृ | डः |
| ढ | ढा | ढि | ढी | ढु | ढू | ढृ | ढः |
| ण | णा | णि | णी | णु | णू | णृ | णः |
| त | ता | ति | ती | तु | तू | तृ | तः |
| थ | था | थि | थी | थु | थू | थृ | थः |
| द | दा | दि | दी | दु | दू | दृ | दः |
| ध | धा | धि | धी | धु | धू | धृ | धः |
| न | ना | नि | नी | नु | नू | नृ | नः |
| प | पा | पि | पी | पु | पू | पृ | पः |
| फ | फा | फि | फी | फु | फू | फृ | फः |
| ब | बा | बि | बी | बु | बू | बृ | बः |
| भ | भा | भि | भी | भु | भू | भृ | भः |
| म | मा | मि | मी | मु | मू | मृ | मः |
| य | या | यि | यी | यु | यू | यृ | यः |
| र | रा | रि | री | रु | रू | रृ | रः |
| ल | ला | लि | ली | लु | लू | लृ | लः |
| व | वा | वि | वी | वु | वू | वृ | वः |
| श | शा | शि | शी | शु | शू | शृ | शः |
| ष | षा | षि | षी | षु | षू | षृ | षः |
| ह | हा | हि | ही | हु | हू | हृ | हः |

## संयुक्ताक्षर

यहाँ तेलुगु की एक विशेषता है। हर व्यंजन का एक चिन्ह है। नागरी के संयुक्ताक्षरों में मूल व्यंजन का (जिसके साथ दूसरे व्यंजन का मेल होता है उसका) खंडित रूप या चिन्ह रहता है और दूसरा (अर्थात् नया जुड़नेवाला व्यंजन) पूरा रहता है और इसी के साथ स्वर-चिन्ह लगाये जाते हैं। पर तेलुगू में मूल व्यंजन पूरा रहता है—उसी के साथ स्वर-चिन्ह लगाया जाता है और उसके साथ दूसरे व्यंजन का खंडित रूप या चिन्ह लगाया जाता है। सत्कार—यहाँ (दूसरे) संयुक्ताक्षर में त और क का मेल है; नागरी में त का खंडित रूप है और क पूरा पूरा लिखा हुआ आकार चिन्ह युक्त है। पर तेलुगू ట न केवल पूरा है बल्कि आकार चिन्ह युक्त भी है उसके साथ (क) క का चिन्ह ు लगाया जाता है ట౯-౪.

## व्यंजन चिन्ह :

|   |   |   |   |   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| క | ఁ | ఖ | ఖ | గ | గ | ఘ | ఘ | జ |
| చ | చ | ఛ | ఛ | జ | జ | ఝ | ఝ | ఞ |
| ట | ట | ఠ | ఠ | డ | డ | ఢ | ఢ | ణ |



|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| త | ధ | ద | ధ | న |
| ప | భ | బ | భ | మ |
| య | ర | ల | వ |   |
| శ | ష | స | హ |   |
|   | ఱ | శ |   |   |

—